स्वामी पेरियार और उनकी सच्ची रामायण

लेखक

सुमेध जग्रवाल

DIPLOMA & DEGREE IN CHEMICAL ENGG. , MA , LLB , PGD - SHE

एक मधुर निवेदन

भारत में समय समय पर बहुत से महापुरुष उत्पन्न हुए हैं , उनमें स्वामी पेरियार भी एक महान विभूति थे । जिन्होंने देश की एकता और अखण्डता के लिए महान कार्य किया । देश में फैली कुरीतियों को मिटाने के लिए उन्होंने जीवन भर सतत संघर्ष किया और वे अपने संघर्ष में सफल भी हुए । भारत देश में कुरीतियों को उत्पन्न करने वाले अश्लील ब्राह्मणी ग्रंथ ही रहे हैं । ऐसे ग्रंथों की आंतरिक सामग्री को उजागर करके उन्होंने ब्राह्मणी व्यवस्था में खलल मचा दिया । ब्राह्मणी ग्रंथों को अश्लील , काल्पनिक और मनगढ़ंत प्रमाणित कर दिया । उनके ऐसे लेखन को देश के उच्चतम न्यायालय ने भी प्रमाणों के आधार पर मोहर लगा दी थी । उनके द्वारा लिखी गई सच्ची रामायण देश में उपस्थित सभी रामायणों के तथ्यों के आधार पर लिखी गई है , जिसमें कुछ भी असत्य नही है । जब सच्ची रामायण जैसे ग्रंथों के माध्यम से ब्राह्मणी लोगों की असलियत सामने लाई जाती है , तो वे तिलमिलाने लगते हैं ।

रामायण एक काल्पनिक और भारतीय लोगों को नीचा दिखाने के लिए लिखी गई एक मनगढ़ंत कथा है । जिसका कोई भी प्रमाणिक आधार नही है । रामायण के चरित्रों में ऐसा कुछ भी नही है कि उनकी आराधना की जाये । रामायण के लेखक और चरित्र सभी धूर्त और मूर्ख रहे हैं । जिनकी भारतीय लोगों को ऐसे अश्लील ग्रंथों के माध्यम से दिग्भ्रमित करने की और अपने काल्पनिक भगवानों के मनगढ़ंत चमत्कारों के माध्यम से गुलाम बनाये रखने की घटिया सोच रही है , जिससे वे निकम्मे बन कर भारतीय लोगों की मेहनत पर गुलछर्रे उड़ाते रहें और भारतीय लोगों का शोषण करते रहें और ब्राह्मणी लोग उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होते रहें । देश की एकता अखण्डता और मनुष्य जाति के हित के लिए रामायण में ऐसा कुछ भी नही है कि उसका अनुसरण किया जाये । स्वामी पेरियार और उनकी सच्ची रामायण पुस्तक को स्वामी पेरियार के तथ्यों के आधार पर विज्ञानी तर्कों के आधार पर एक नये सिरे से सुसज्जित किया है , जोकि ब्राह्मणी ग्रंथों के पाखण्डों को उजागर करने के लिए नितांत आवश्यक हैं । ये पुस्तक ब्राह्मणी लोगों को आरम्भ में कड़वी लगेगी , परन्तु वे लोग देश हित और सम्पूर्ण भारतीय समाज के हित के सम्बंध में सोचेंगे तो ये ही पुस्तक उनको मधु अर्क की तरह मीठी लगेगी । देश से पाखण्ड और अंधविश्वास को मिटा कर देश में हर मनुष्य की सुख शांति के लिए विज्ञान की सतत अविचल धारा का विचरण करने के लिए ये पुस्तक बहुत ही खरी उतरेगी । भारतीय मनुष्यों में जाति , धर्म , पाखण्ड , अंधविश्वास और काल्पनिक भगवानों के जो मनोविकार भरे हुए हैं , उनसे छुटकारा मिलेगा ।

धन्यवाद

सुमेध जग्रवाल

विषय सूची

1. स्वामी पेरियार और उनका संघर्ष

भारत का इतिहास बहुत ही उतार चढ़ाव वाला रहा है । भारत की मूल संस्कृति बहुत ही उत्तम थी । भारत की मूल संस्कृति को खण्डित करने के लिए कई विदेशी संस्कृतियाँ समय समय पर भारत में आती और जाती रही हैं और भारतीय मूल संस्कृति को खण्डित करती रही हैं । भारतीय मूल संस्कृति को सबसे अधिक नुकसान विदेशी आर्य संस्कृति ने पहुंचाया है । इसके साथ साथ मुगल और अंग्रेजी संस्कृति ने भी भारत की मूल संस्कृति को नुकसान पहुंचाया है । भारतीय मूल संस्कृति की रक्षा के लिए समय समय पर भारत देश में महान विभूति उत्पन्न होती रही हैं । वायरस रूपी ब्राह्मणी व्यवस्था को समाप्त करके बुद्ध की समता , ममता और मानवतावादी महान संस्कृति को स्थापित करने के लिए बहुत सी महान विभूतियों ने महान कार्य किये हैं , उनमें स्वामी पेरियार भी एक थे । उनका जन्म 17 सितम्बर 1879 को पश्चिमी तमिलनाडु के इरोड में एक सम्पन्न परम्परावादी हिन्दू व्यवस्था मानने वाले परिवार में हुआ था । उनका पूरा नाम इरोड वेंकट नायकर रामास्वामी था । जिन्हें पेरियार (तमिल में अर्थ - सम्मानित व्यक्ति) नाम से भी जाना जाता था । 1885 में उन्होंने एक स्थानीय प्राथमिक विद्यालय में दाखिला लिया । परन्तु कोई पाँच साल से कम की औपचारिक शिक्षा मिलने के बाद ही उन्हें अपने पिता के व्यवसाय से जुड़ना पड़ा । उनके घर पर भजन तथा उपदेशों का सिल सिला चलता ही रहता था । बचपन में ही वे इन उपदेशों में कही बातों की प्रमाणिकता पर सवाल उठाते रहते थे । हिन्दू महाकाव्यों तथा पुराणों में कही बातों की परस्पर विरोधी तथा बेतुकी बातों का मखौल भी वे उड़ाते रहते थे । बाल विवाह , देवदासी प्रथा , विधवा पुनर्विवाह के विरुद्ध अवधारणा , स्त्रियों तथा दलितों के शोषण के पूर्ण विरोधी थे । उन्होंने हिन्दू वर्ण व्यवस्था का भी बहिष्कार किया । 19 वर्ष की उम्र में उनकी शादी नगम्मल नाम की 13 वर्ष की लड़की से हुई । उन्होंने अपनी पत्नी को भी अपने विचारों से ओत प्रोत किया ।

1904 में पेरियार ने एक ब्राह्मण , जिसका कि उनके पिता बहुत आदर करते थे , के भाई को गिरफ्तार किया जा सके न्यायालय के अधिकारियों की मदद की । इसके लिए उनके पिता ने उन्हें लोगों के सामने पीटा । इसके कारण कुछ दिनों के लिए पेरियार को घर छोड़ना पड़ा । पेरियार काशी चले गए । वहां निशुल्क भोज में जाने की इच्छा होने के बाद उन्हें पता चला कि यह सिर्फ ब्राह्मणों के लिए था । ब्राह्मण नही होने के कारण उन्हें इस बात का बहुत दुःख हुआ और उन्होंने ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरोध की ठान ली । वे अपने शहर के नगरपालिका के प्रमुख बन गए । चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के अनुरोध पर 1919 में उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ली । इसके कुछ दिनों के भीतर ही वे तमिलनाडु इकाई के प्रमुख भी बन गए । केरल के कांग्रेस नेताओं के निवेदन पर उन्होंने वाईकॉम आंदोलन का नेतृत्व भी स्वीकार किया जो मन्दिरों की ओर जाने वाली सड़कों पर दलितों के चलने की मनाही को हटाने के लिए संघर्ष रत था । उनकी पत्नी तथा दोस्तों ने भी इस आंदोलन में उनका साथ दिया । युवाओं के लिए कांग्रेस द्वारा संचालित प्रशिक्षण शिविर में एक ब्राह्मण प्रशिक्षक द्वारा गैर - ब्राह्मण छात्रों के प्रति भेदभाव बरतते देख उनके मन में कांग्रेस के प्रति विरक्ति आ गई

। उन्होंने कांग्रेस के नेताओं के समक्ष दलितों तथा पीड़ितों के लिए आरक्षण का प्रस्ताव भी रखा , जिसे मंजूरी नही मिल सकी । अंततः उन्होंने कांग्रेस छोड़ दी । दलितों के अधिकार के लिए 1925 में उन्होंने एक आंदोलन भी चलाया । सोवियत रूस के दौरे पर जाने पर उन्हें साम्यवाद की सफलता ने बहुत प्रभावित किया । फिर इन्होंने जस्टिस पार्टी , जिसकी स्थापना कुछ गैर ब्राह्मणों ने की थी , का नेतृत्व संभाला । बाद में जस्टिस पार्टी का नाम बदलकर द्रविड़ कड़गम कर दिया गया । 1937 में राजाजी द्वारा तमिलनाडु में आरोपित हिंदी के अनिवार्य शिक्षण का उन्होंने घोर विरोध किया और बहुत लोकप्रिय हुए । उन्होंने अपने को सत्ता की राजनीति से अलग रखा तथा आजीवन दलितों तथा स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए प्रयास किया और वे 24 सितम्बर 1973 को परिनिर्वाण को प्राप्त हुए ।

भेंडीहार गडरिया जाति में पैदा महान क्रांतिकारी , समाज सुधारक , पिछड़ों के लिए आरक्षण की मांग करने वाले , हिन्दू धर्म के पाखंड एवं अतार्किक परम्पराओं के प्रबल विरोधी , ईश्वर की सत्ता को सिरे से ख़ारिज करने वाले ई. व्ही. पेरियार रामास्वामी नायकर की जयंती 17 सितम्बर को पूरे देश में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है । पेरियार के राजनैतिक एवं सामाजिक चिंतन की नींव गैर ब्राह्मणवाद एवं गैर कांग्रेसी सोच से विकसित हुई । अपने बचपन से ही पेरियार ब्राह्मणवाद का शिकार रहे । उन्हें उनके सवर्ण समाज के शिक्षक के घर में गिलास से मुंह लगाकर पानी पीने की मनाही थी और अगर वह किसी गैर जाति के बच्चे के साथ खेलते थे तो बालक पेरियार को अपने घर में मार पड़ती थी । इन सब चीजों से तंग आकर पेरियार बचपन में ही वाराणसी भाग गए। परंतु वहां जाकर उन्हें ब्राह्मणवाद के वीभत्स रूप का पुनः अवलोकन करना पड़ा । बालक पेरियार ने जब अपनी भूख मिटाने के लिए वाराणसी की एक गली में पुण्य कमाने हेतु चलने वाले निःशुल्क भोजनालय में जब भोजन करने का प्रयास किया तो वहां के दरबान ने उन्हें यह कह कर भगा दिया कि यह भोजनालय केवल ब्राह्मणों के लिए ही हैं और तब भूखे बालक पेरियार को पेट भरने के लिए जूठी पत्तलों से खाना खाना पड़ा और इसके लिए भी उन्हें पत्तलों के पास मंडराते हुए कुत्तों से युद्ध करना पड़ा। यह सब घटनाएं बालक पेरियार के कोमल हृदय पर गहरा असर कर गई और उन्होंने अपनी तार्किक बुद्धि के बल पर ब्राह्मणी व्यवस्था का ऐसा जनाजा निकाला कि आज ब्राह्मणी व्यवस्था को समाप्त करके वहां के लोग भेदभाव रहित भाईचारे से रह रहे हैं । पेरियार स्वामी जी ने सामाजिक समानता पर बल दिया । मनुस्मृति को जलाया तथा ब्राह्मणों के बिना विवाह संस्कार करवाये । जाति भेद को मिटाने के लिए कई आंदोलन किये ।

ब्राह्मण आपको भगवान के नाम पर मूर्ख बना कर अन्धविश्वाव में निष्ठा रखने के लिए तैयार करता है और स्वयं आरामदायक जीवन जीता है । तुम्हे अछूत कहकर निंदा करता है । देवता की प्रार्थना करने के लिए दलाली करता है । मैं इस दलाली की निंदा करता हूँ और आपको भी सावधान करता हूँ कि ऐसे ब्राह्मणों का विश्वास मत करो । उन देवताओं को नष्ट कर दो जो तुम्हें शूद्र अतिशूद्र कहें । उन पुराणों और इतिहास को ध्वस्त कर दो । जो देवता को शक्ति प्रदान करते हैं । उस देवता की पूजा करो जो वास्तव में दयालु भला और बौद्धगम्य है । ब्राह्मणों के पैरों में क्यों गिरना ।

क्या ये मन्दिर हैं ? क्या ये त्यौहार हैं ? नही । ये सब कुछ भी नही हैं । हमें बुद्धिमान व्यक्ति की तरह व्यवहार करना चाहिए , यही प्रार्थना का सार है । अगर देवता ही हमें निम्न जाति बनाने का मूलकारण है , तो ऐसे देवता को नष्ट कर दो , अगर धर्म है तो इसे मत मानो । अगर मनुस्मृति , गीता या अन्य कोई पुराण आदि हैं तो इनको जला कर राख कर दो । अगर ये मन्दिर , तालाब या त्यौहार हैं तो इनका बहिष्कार कर दो । अंत में हमारे राजनीतिज्ञ ऐसा करते हैं तो इसका खुले रूप में पर्दाफाश करो ।

संसार का अवलोकन करने पर पता चलता है कि भारत जितने धर्म और मत मतान्तर कहीं भी नही हैं । बल्कि इतने धर्मान्तरण दूसरी जगह कही भी नही हुए हैं । इसका मूल कारण भारतीयों का निरक्षर और गुलामी प्रवृत्वि के कारण उनका धार्मिक शोषण करना आसान है । आर्यों ने हमारे ऊपर अपना धर्म थोप कर असंगत , निरर्थक और अविश्वसनीय बातों में हमें फंसाया । अब हमें इन्हें छोड़कर ऐसा धर्म ग्रहण कर लेना चाहिए जो मानवता की भलाई में सहायक सिद्ध हो । ब्राह्मणों ने हमें शास्त्रों और पुराणों की सहायता से गुलाम बनाया है और अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए मन्दिर , ईश्वर और देवी देवताओं की रचना की , सभी मनुष्य समान रूप से पैदा हुए हैं तो फिर अकेले ब्राह्मण ऊँच व अन्य को नीच कैसे ठहराया जा सकता है । संसार के सभी धर्म अच्छे समाज की रचना के लिए मार्ग दर्शन करते हैं , परन्तु हिन्दू धर्म अर्थात आर्य संस्कृति अर्थात वैदिक संस्कृति अर्थात सनातन संस्कृति में हम यह अंतर पाते हैं कि यह धर्म एकता और मैत्री के लिए नही है । ऊँची - ऊँची लाट किसने बनाई ? मन्दिर किसने बनाये और उनकी चोटी पर सुनहरी परत किसने चढ़ाई ? क्या ब्राह्मणों ने इन मन्दिरों , तालाबों या अन्य परोपकारी संस्थाओं के लिए एक रुपया भी दान दिया ? ब्राह्मणों ने अपना पेट भरने हेतु गुण , कर्म , ज्ञान और शक्ति के बिना ही देवताओं की रचना करके और स्वयं भू देवता बनकर हंसी मजाक का विषय बना दिया है । सभी मानव एक हैं , हमें भेदभाव रहित समाज चाहिए । हम किसी को प्रचलित सामाजिक भेदभाव के कारण अलग नही कर सकते हैं । हमारे देश को आजादी तभी मिल गई समझना चाहिए , जब ग्रामीण लोग देवता , अधर्म , जाति और अन्धविश्वास से छुटकारा पा जायेंगे । आज विदेशी लोग दूसरे ग्रहों पर सन्देश और अंतरिक्ष यान भेज रहे हैं और हम ब्राह्मणों के द्वारा श्राद्धों में परलोक में बसे अपने पूर्वजों को चावल और खीर भेज रहे हैं । क्या ये ही बुद्धिमानी है ? ब्राह्मणों से मेरी यह विनती है कि अगर आप हमारे साथ मिलकर नही रहना चाहते हैं तो आप भले ही जहन्नुम में जाएँ । कम से कम हमारी एकता के रास्ते में मुसीबतें खड़ी करने से तो दूर जाओ ।

ब्राह्मण सदैव ही उच्च एवं श्रेष्ठ बने रहने का दावा कैसे कर सकता है ? समय बदल गया है । उन्हें नीचे आना होगा । तभी वे आदर से रह पाएंगे , नही तो एक दिन उन्हें बलपूर्वक और देशाचार के अनुसार ठीक होना होगा ।

पेरियार का सामाजिक एवं राजनैतिक चिंतन बहुजन समाज के लिए क्यों आवश्यक है और उसकी जड़ें कहां से आती है , यह सब बहुजन आंदोलनकारियों को जानना आवश्यक है । बहुजन आंदोलन के लिए यह आज भी उतना ही जरूरी है जितना कल था । पेरियार के राजनैतिक एवं सामाजिक चिंतन की नींव गैर ब्राह्मणवाद एवं गैर कांग्रेसी सोच से विकसित हुई । अपने जवानी के दिनों में सन् 1924 में जब पेरियार तमिलनाडु कांग्रेस के अध्यक्ष बने तो उन्हें कांग्रेसी ब्राह्मणों के ब्राह्मणवाद ने और दुखी किया । यहां 1924 में केरला के वैक्यूम सत्याग्रह का जिक्र करना आवश्यक है । क्योंकि इस सत्याग्रह के मार्ग में उन्हें मोहनदास करमचंद गांधी एवं ब्राह्मण कांग्रेसियों से सीधे -सीधे जूझना पड़ा । याद रहे कि 1924 का वैक्यूम सत्याग्रह शूद्रों एवं अछूत जातियों के वैक्यूम में बने मंदिर के चारो ओर बनी सड़क पर चलने के हक के लिए था । आंदोलन लंबा चला और इस दौरान पेरियार को कई बार जेल जाना पड़ा । पेरियार जब जेल में होते थे तो उनकी पत्नी एवं उनकी बहन उस आंदोलन का नेतृत्व करती थीं । एक तरह पेरियार ने अपने पूरे परिवार को बहुजन आंदोलन में लगा लिया था । अंत में पेरियार के आंदोलन के पश्चात यह सड़क शूद्रों एवं अस्पृश्यों के लिए खोल दी गई । परंतु कांग्रेसियों एवं इतिहासकारों ने इस आंदोलन का सारा श्रेय मोहनदास करमचंद गांधी को दे दिया । यह बात तो दबी रहती परंतु 34 साल बाद 1958 में पेरियार ने इस आंदोलन का सारा हाल अपने मुंह से सुनाया, तब जाकर सच सामने आया । जब कहीं ये बात पता चली कि वैक्यूम सत्याग्रह का नेतृत्व तो पेरियार ने किया था । इसी कड़ी में पेरियार को कांग्रेसियों के ब्राह्मणवाद का पता दो और बातों से चला । 1925 में जब कांग्रेसियों ने शिक्षा के लिए गुरुकुल योजना शुरू की तो यह योजना सभी वर्गों के बच्चों के लिए समान शिक्षा के लिए थी । परंतु कांग्रेस के ब्राह्मण नेताओं ने ब्राह्मण छात्रों के लिए अलग व्यवस्था की और अस्पृश्य जातियों के छात्रों के लिए अलग । यहां तक की ब्राह्मण छात्रों को भोजन में शुद्ध घी के पकवान दिए जाते थे और शूद्र और अस्पृश्य छात्रों को चावल का माड़ । पेरियार ने इस पक्षपात पर घोर आपत्ति की ।

भेंडीहार गडरिया जाति में पैदा महान क्रांतिकारी , समाज सुधारक , पिछड़ों के लिए आरक्षण की मांग करने वाले , हिन्दू धर्म के पाखंड एवं अतार्किक परम्पराओं के प्रबल विरोधी , ईश्वर की सत्ता को सिरे से ख़ारिज करने वाले ई. व्ही. पेरियार रामास्वामी नायकर साहब ने न केवल "सच्ची रामायण"के जरिये राम के यथार्थ से आम जन मानस को रूबरू कराया वरन उन्होंने कांग्रेस के 1920 के तिरुनेलवेली , 1921 तंजौर , 1922 तिरुपुर , 1923 सलेम , 1924 तिरुअन्नामलाई और 1925 के कांचीपुरम अधिवेशनों में जातीय प्रतिनिधित्व देने के लिए कम्युनल रिप्रजेंटेशन का सिद्धांत पेश किया था। शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में अब्राह्मण वर्ग को जनसंख्या के अनुपात में प्रतिनिधित्व दिलाने हेतु स्थान सुरक्षित करने के लिए पेश किये जाने वाले प्रस्ताओं से कांग्रेस में खलबली मच गयी थी । इस प्रस्ताव का विरोध आयंगर , संथानम , सी. राघवाचार्य , वी. वी. एस. अय्यर , एन. एस. वार्धचारी , चक्रवर्ती राजगोपालाचारी एवं गाँधी जी तक ने किया । 1925 के कांचीपुरम सम्मेलन से अपमानित कर पिछड़ों के इस मसीहा को बाहर कर दिया

गया । पेरियार साहब ने इस प्रस्ताव को माने वगैर मिलने वाले स्वराज को "ब्राह्मण राज" कहा था । आज पेरियार नायकर की ही वजह से ही तमिलनाडु के हाईकोर्ट में 60% से ज्यादा जज ओबीसी , एससी और एसटी समुदाय के हैं ।

उत्तर भारत के लोगों का साक्षात्कार पेरियार से पहली बार 1968 में ललई सिंह यादव द्वारा लिखी गई 'सच्ची रामायण' की चाभी से होता है । ललई सिंह यादव द्वारा यह पुस्तक लिखने पर काफी विवाद हुआ और हाईकोर्ट में मुकदमा तक चला । इस मुकदमे को ललई सिंह यादव ने जीता और इस तरह उसके बाद पुस्तक से प्रतिबंध हटा । यहां तक की हाईकोर्ट ने सरकार को ललई सिंह यादव को हर्जाना देने के लिए भी कहा । तद्उपरांत 1978 के पश्चात मान्यवर कांशीराम ने उत्तर भारतीयों को ही नहीं ई.वी. रामास्वामी पेरियार को बामसेफ के माध्यम से एक समाज सुधारक के रूप में बहुजन समाज (अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं कंनवर्टेड माइनॉरिटी) के बीच में स्थापित किया । अपनी भोली भाली सामान्य जनता को समझाने के लिए मान्यवर उनको 'दाढ़ी वाला बाबा' कह कर बुलाते थे । पेरियार मान्यवर कांशीराम द्वारा स्थापित पांच समाज सुधारकों यथा , नारायणा गुरु , जोतिराव फुले , छत्रपति शाहूजी महाराज , ई.वी.रामास्वामी नाइकर पेरियार एवं बाबासाहेब अंबेडकर में से एक थे । मान्यवर ने 1980 में अपनी मासिक अंग्रेजी पत्रिका अप्रेस्ड इंडियन के एक पूरे अंक को यह कह कर पेरियार को समर्पित किया कि उन्होंने अपना सारा जीवन सेल्फ रेस्पेक्ट मूवमेंट के लिए लगाया था। पत्रिका का कवर भी पेरियार की तस्वीर का था।

2. कथा की भूमिका

सच्ची रामायण स्वामी पेरियार द्वारा रामायण के चरित्रों के आधार पर लिखी गई है । रामायण के प्रमाणों के आधार पर सच्ची रामायण को उच्चतम न्यायालय ने मान्यता प्रदान की है । यदि हम रामायण का निष्पक्ष और गम्भीर रूप से अध्ययन करें तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचेंगे कि लंका राज्य की विजय वास्तव में असत्य की सत्य पर , असभ्यता की सभ्यता पर , क्रूरता की दयालुता पर , अशिष्टता की शिष्टता पर , दुष्टता की सज्जनता पर और मर्यादाहीनता की मर्यादा पर विजय की एक दुखांत कहानी है । आज भी उत्तर भारत के संकीर्ण , अदूरदर्शी , रूढ़िवादी और धर्मांध लोग भारत के निवासियों को चिढ़ाने और अपमानित करने के उद्देश्य से भूतकाल की उस दुर्भाग्यपूर्ण और मनगढ़ंत लंका विजय की दूषित स्मृति को बनाये रखने के लिए प्रत्येक वर्ष रावण के पुतले का दहन दशमी के दिन करते हैं और उस दिन को विजय दशमी का नाम देकर ख़ुशी मनाते हैं जोकि भारतीय मूलवासियों की आस्था और भावना पर प्रतिघात है

। जिसके विरुद्ध माननीय न्यायालय में ऐसे लोगों के विरुद्ध भारतीय संविधान के अनुच्छेद - 19 (2) के अधीन रोक लगाई जा सकती है और भारतीय दण्ड संहिता की धारा- 153A , 295A के अधीन वाद लाया जा सकता है ।

स्वामी पेरियार ने भारतीय मूलवासी द्रविड़ों को उनकी अस्मिता का ज्ञान कराने के लिए ब्राह्मणी राक्षसी व्यवस्था और उनके रूढ़िवाद के विरुद्ध एक सशक्त आंदोलन खड़ा कर दिया जो पूर्णतः सफल रहा । ब्राह्मणों के सामन्तवाद को उखाड़ फेंक द्रविड़ शासन की स्थापना साकार हो उठी । आज भी तमिलनाडु में द्रविड़ों की सरकार स्थापित है । रामायण और महाभारत विदेशी आर्यों द्वारा छल कपट से बढ़ा चढ़ाकर गढ़ी गई कथाएँ हैं । जिनके माध्यम से विदेशी आर्य संस्कृति के लोग अशिक्षित भारतीय मूलवासी लोगों को लुभाकर मूर्ख बनाते रहते हैं । उनके सम्मान और गौरव की भावना को ठेस पहुंचाते हैं । उनके विवेक में मनोविकार उत्पन्न करते हैं और उनकी मानवता पर आधारित संस्कृति पर कुठाराघात करते हैं । भारतीय एकता और अखण्डता को दूषित करते हैं , जो कृत्य देश द्रोह और भारतीय संविधान की अवहेलना के अधीन आते हैं ।

रामायण और महाभारत आर्यों अर्थात ब्राह्मणों द्वारा छल कपट से बढ़ा चढ़ाकर गढ़ी गई कथाएँ हैं। इन दो कथाओं के नायक क्रमशः राम और कृष्ण हैं , जो आर्य समुदाय के हैं और अंततः साधारण श्रेणी के पुरुष हैं । ये कथाएँ धूर्तता के साथ थोपी गई हैं । पुराणों में जिन घटनाओं के घटित होने के बारे में कहा गया हैं , वे सभी अत्यधिक असभ्य और बर्बरतापूर्ण हैं । इनमें ऐसा कुछ भी नही है जो लोगों के लिए उपयोगी हो और इससे कुछ सीखा जा सके एवं उसके अनुसार आचरण किया जा सके । ये नैतिकता रहित हैं । स्पष्ट रूप से ये काल्पनिक हैं। ये काल्पनिक कथाएँ इसलिए लिखी गई हैं ताकि ब्राह्मणों को दूसरों की नजरों में ऊँचा दिखाया जा सके , महिलाओं को वश में करके उन्हें ऐसी व्यवस्था का आश्रित बनाया जा सके , उसके अवांछित अस्तित्व को शाश्वत अर्थात अमर बनाया जा सके ।

ये मौलिक कथाएँ संस्कृत भाषा में लिखी गई हैं । वे इन कथाओं को वेदों के नाम से पुकारते हैं । इनको वे ईश्वरीय शास्त्र बताते हैं । इस सफेद झूठ द्वारा वे अपने महत्व को बढ़ाते हैं , जबकि वास्तव में उनमें कोई गुण नही हैं । इनके माध्यम से भारतीय जनता को धोखा दिया जाता है । इन कथाओं के बहुत महत्वपूर्ण और पवित्र होने के बारे में व्यापक प्रचार किया जाता है और इन्हें स्कूल स्तर से ही लोगों के रक्त में भरा जाता है । मौलिक रामायण में कुछ भी प्रशंसा करने योग्य नही है , कुछ भी ईश्वरीय नही है । कुछ सीखा जाये और उसका पालन किया जाए , इसमें ऐसा कुछ भी नही है , जो तर्क के सामने टिक पाए । हमारे लोग अपने नेत्र खोलें और स्वयं देखें कि आर्यों अर्थात ब्राह्मणों की कथाएँ ढोंग हैं और खोखली हैं । इनके माध्यम से स्वयं को श्रेष्ठ बताते हैं और दूसरों को नीच बताते हैं ।

रामायण एक सत्य कथा नही हो सकती । शंकराचार्य , अनेक विद्वानों तथा धर्माचार्यों ने भी यही विचार व्यक्त किया है । दूसरे , वाल्मीकि ने स्वयं कहा है कि राम न ही ईश्वर था और न ही उसमें कोई ईश्वरीय शक्ति थी । इस देश में ब्राह्मण

हिन्दू रामायण को एक पवित्र कथा मानते हैं और उसमें वर्णित विशिष्ट व्यक्तियों के प्रति श्रद्धा रखते हैं । ऐसा क्यों है ? इसका कारण है ब्राह्मणों द्वारा प्रभावशाली प्रचार और गैर - ब्राह्मणों में बुद्धि और स्व - सम्मान की कमी । द्रविड़ों के विरुद्ध और अधिक घृणा उत्पन्न करने के विचार से इसकी रचना हुई और यह घृणा कंडा पुराण में प्रदर्शित घृणा से अधिक है । कंडा पुराण की रचना रामायण से बहुत पहले हुई थी और यह केवल एक व्यक्ति द्वारा लिखी गई थी । रामायण बहुत पहले के काल में अलग अलग समय पर अनेक व्यक्तियों द्वारा लिखी गई है । जिनके द्वारा राम और सीता को बहुत घटिया चरित्र वाला दिखाया गया है ।

रामायण की घटनाओं का विस्तृत विवरण , अरेबियन नाइट्स , शेक्सपियर एवं मदनाकम राजन द्वारा लिखित कहानियों तथा पंचतन्त्र और अन्य काल्पनिक कहानियों के समान दिया गया है । इसलिए यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि रामायण एक सच्ची कहानी नही है । कोई कह सकता है कि देवत्व तथा ईश्वर की दैवी शक्ति अनूठे तथ्यों द्वारा ही प्रभावी हो सकती है । किन्तु कोई भी यह स्पष्ट देख सकता है कि इनमें वर्णित तथ्य आधारहीन , अनावश्यक तथा बुद्धिहीन हैं और इस कथा में इस बात पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया है कि कथा का नायक राम मनुष्य के रूप में स्वर्ग से अवतरित ईश्वर है । किन्तु लेखक वाल्मीकि यह चित्रित करता है कि राम विचार और व्यवहार से दुष्ट था , वह झूठ , विश्वासघात , छल कपट , धूर्तता , निर्दयता , लोभ , हत्या , नशेबाजी , मांसभक्षण , छुपकर निर्दोष पर तीर चलाने वाला , दुष्टों का साथी , नामर्द आदि का साकार रूप था । राम के विचार देश हित और भारतीय जनता के हित में दुष्ट प्रकृति के थे । राम ने ब्राह्मणी व्यवस्था को स्थापित करने के लिए भारतीय समाज की एकता को छिन्न - भिन्न करके भारतीय मानवता वाली व्यवस्था को खण्डित कर दिया और पूरा भारतीय समाज जातिपांति और ऊँचनीच में विभाजित हो कर कमजोर हो गया । राम का व्यवहार शूद्रों और स्त्री जाति के लिए दुष्ट प्रकृति का था । रामायण में हर जगह भारतीय मूलवासियों और स्त्रियों को नीचा दिखाकर अपमानित किया है । राम नामर्दी का भी साकार रूप था । सीता राम के साथ 25 वर्ष तक रही , परन्तु राम की नपुंसकता के कारण सीता माँ नही बन सकी । हम यह नही कह सकते हैं कि सीता में माँ बनने की क्षमता नही थी । सीता रावण के साथ 3 महीने रहने के उपरांत ही गर्भवती हो गई थी । राम धूर्तता का भी साकार रूप था । महा ऋषि शम्बूक जो भारतीय पिछड़े लोगों को ज्ञान की शिक्षा देता था , उस महान ऋषि की हत्या करके राम ने बड़ी धूर्तता का कार्य किया । राम विश्वासघाती भी था , उसने निर्दोष बाली पर छुपकर तीर चला कर और उसकी हत्या करके नामर्दी का कार्य किया था । राम झूठ का भी साकार रूप था , उसने सुरुपनखा से झूठ बोला था कि लक्ष्मण शादी शुदा नही है और इस झूठ के कारण लाखों लोगों को राम रावण युद्ध के कारण अपनी जान गंवानी पड़ी थी । राम नशेबाजी और माँस भक्षण का भी साकार रूप था , जोकि लगभग सभी रामायणों से प्रमाणित है । राम दुष्टों का साथ देने वाला एक साकार रूप था । सुग्रीव और विभीषण ने अपने भाइयों से राजगद्दी छीनने की दुष्टता की और राम ने ऐसे दोष्टों का साथ देकर अपना साकार रूप दर्शित किया । राम लोभ का भी

साकार रूप था । उसने अयोध्या की राजगद्दी के लोभ में अपनी माँ और अपने पिता को क्या क्या अपशब्द नही कहे । राम ने अपनी पत्नी सीता और अपने बच्चों के साथ निर्दयता का व्यवहार किया । जिससे राम निर्दयता के साकार रूप प्रमाणित होते हैं । यह स्पष्ट दिखाई देता है कि राम अथवा उससे सम्बंधित कहानी और स्वभाव में कुछ भी दैवीय नही है और वह औसत दर्जे से बहुत नीचा है । वह अनुसरण करने योग्य नही है ।

यह कथा न ही धार्मिक है और न ही बुद्धिसंगत है । देवताओं ने चार मुख वाले ब्रह्मा से शिकायत की कि राक्षस उनके द्वारा दी जाने वाली बलि को लूट लेते हैं । ब्रह्मा अपने पिता विष्णु के पास पहुंचा । विष्णु ने पृथ्वी पर अवतार लेने का निश्चय किया और राम के रूप में जन्म लेकर राक्षसों के राजा रावण का वध कर दिया (बालकाण्ड 15 वां अध्याय) यही कथा का उद्गम है । पृथ्वी पर आने पर विष्णु को अनेक परेशानियों और कपटों का सामना करना पड़ा । इसका कारण आर्यों के पवित्र पुराण में वर्णित है , जिसके अनुसार विष्णु ने अपने पूर्व जन्म में अनेक अनैतिक एवं घृणित कर्म किये । मुनियों तथा ऋषियों के साथ किये गए दुर्व्यवहार के कारण विष्णु को उनके द्वारा श्राप दिए गए और उस अपराध के दण्ड के रूप में उसे पृथ्वी पर जन्म ग्रहण करना पड़ा । यह श्राप क्यों दिए गए ? क्योंकि विष्णु ने बिनिहु मुनि की पत्नी की हत्या करने का घोर पाप किया । उसने अनैतिक और छल कपट से जलन्धर असुर की पत्नी का सतीत्व नष्ट कर डाला । उसने दिन के उजाले में खुले आम उस स्त्री के साथ बलात्कार किया , जो सम्भवतः दिखाई दे रहा था । पुराणों में ऐसी अनेक मूर्खतापूर्ण कथाएँ पाई जाती हैं । अब अपने विवेक से सोचें कि देवता कौन हैं और असुर कौन हैं । किस प्रकार ईश्वर होते हुए भी वह विष्णु कामुकता , चोरी , हत्या और घृणित कृत्यों एवं मनोविकारों का दास हो गया ? क्या ऐसे अभद्र कृत्यों में संलग्न पुरुष ईश्वर समझे जाने के योग्य हैं ? क्या निर्दोष पशुओं का क्रूरता से वध किया जाना और शराब के साथ उनका मांस गले में उतारना और मंत्रोचारण करना ही यज्ञ की परिभाषा है ? इन सब कृत्यों से क्या ईश्वर प्रसन्न होता है ? क्या ऐसे कृत्यों से देवताओं , यज्ञकर्ता और यज्ञ आयोजकों को उच्चतर पदवी प्रदान करनी चाहिए ? क्या ऐसे लोगों को दान के रूप पारिश्रमिक भी देना चाहिए ? क्या ऐसी निर्दयता को रोकना गलत है जो मूक प्राणियों के साथ की जाती है ? क्या ईश्वर के लिए यह ठीक है कि वह ऐसे दयाहीन वधिकों को देवता समझे और सहानुभूति रखते हुए इन यज्ञों को रोकने वालों को राक्षस कहे ? शिक्षित लोगों को इन बातों पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए ।

वर्तमान में पशुओं के साथ क्रूरता और नशे का व्यसन करने को लोगों तथा सरकार द्वारा अपराध समझा जाता है , जो दण्डनीय और कारावास योग्य है । क्या रावण के समय में भी इन अपराधों को रोका जाना न्याय संगत तथा उचित नही था ? क्या रावण का यह कर्तव्य नही था कि वह कानून बनाकर राज्य में मदिरा का सेवन और पशुओं के साथ आर्यों द्वारा किये जाने वाले क्रूर व्यवहार को निषेध करे ? रावण ने आर्यों द्वारा यज्ञ के नाम पर किये जा रहे पशु वध और मदिरा सेवन जैसे क्रूर कृत्यों पर प्रतिबन्ध लगाया था ? आर्य लोगों द्वारा रावण के लगाये गए इस प्रतिबन्ध को ध्वस्त

करने के लिए काल्पनिक ईश्वर रूपी राम का प्रयोग किया और राम को ईश्वरीय अवतार घोषित किया जिससे भारतीय लोग जो उनके इस व्यसन का विरोध करते थे उनका विनाश किया जा सके। राम ने आर्यों के इस व्यसन का पूर्णरूपेण समर्थन किया जिससे आर्य लोग यज्ञों के नाम से निर्दोष पशुओं की हत्या करते रहें और मदिरा का सेवन करके अय्यासी करते रहें। यदि हम इन विषयों पर विचार करें तो हम पायेंगे कि रामायण असंगतियाँ और बेतुकेपन से भरी पड़ी है।

3. राम की जन्म भूमि की सत्यता

जितनी भी सभ्यता विकसित हुई हैं , वे नदियों और घने जंगलों के किनारे ही विकसित हुई हैं। उस समय मनुष्य खाने और पीने के लिये प्राकृतिक स्त्रोतों पर निर्भर रहता था। गंधर्वों का गांधार देश सिंधु घाटी सभ्यता में सिंधु नदी के दोनों किनारों पर विकसित हुआ था। गंधर्वों के गांधार की पुष्टि ऋग्वेद , रामायण एवं महाभारत से होती है। दशरथ द्वारा किये गए अश्वमेघ यज्ञ में उनकी ससुराल सिंधु घाटी के कई राजाओं का वर्णन आया है। (वाल्मीकि रामायण)। वाल्मीकि रामायण का लेखन और रामायण की घटना का वृतान्त सिंध घाटी की सभ्यता के बाद का प्रमाणित होता है। भरत ने अपने नाना केकयराज अखपति के आमन्त्रण और उनकी सहायता से गन्धर्वों के देश गांधार को जीता | इससे सिद्ध होता है कि अयोध्या नगरी भी सिंधुघाटी सभ्यता के आस पास ही थी। महाभारत युद्ध के बाद परीक्षित के वंशजों ने कुछ पीढ़ियों तक वहां अधिकार बनाये रखा | महाभारत की घटना भी सिंध घाटी के बाद की है। सिंधु सभ्यता के लोग नागवंशी भी कहलाते थे , इसलिए जनमेजय ने अपना नागयज्ञ भी वहीं किया था | ऐसा वाल्मीकि रामायण की पृष्ठ संख्या - 1016 सर्ग - 101 उत्तरकाण्ड में लिखा है। इससे प्रमाणित है कि वर्तमान अयोध्या राम की जन्म भूमि नही है।

वाल्मीकि रामायण में बुद्ध को नास्तिक कह कर उन्हें मारने की बात लिखी गई है। राजा आंभी , चन्द्रगुप्त मौर्य , बिन्दुसार , सम्राट अशोक , कनिष्क इत्यादि का अधिकार तक्षशिला अर्थात सिंधु घाटी पर बना रहा | हमारे देश का नाम भारतवर्ष रहा है और भारतवर्ष में 16 महाजनपद रहे हैं , जिनमें अयोध्या का नाम अंकित नही है। इससे सिद्ध होता है कि उस समय भी अयोध्या नही थी। यदि अयोध्या राम की जन्म भूमि रही होती तो सिंध घाटी की तरह अयोध्या में भी राम के प्रमाण मिलते। अभी तक अयोध्या में ऐसा कोई भी प्रमाण नही मिला है।

इक्ष्वाकु वंश के समस्त राजाओं ने कपिलवस्तु पर राज्य किया है । इक्ष्वाकु वंश की उत्पत्ति कपिलवस्तु की है और कपिलवस्तु को ही जनतन्त्र होने के कारण अयोध्या कहा गया है । इक्ष्वाकु राजाओं की भाषा पाली रही है और राम की भाषा संस्कृत रही है , इसलिए राम इक्ष्वाकु वंश के नही थे । भारतवर्ष में आम लोगों की जानकारी के लिए जितने भी प्राचीन शिलालेख हैं , उन पर पाली भाषा ही है , संस्कृत नही । इसका तात्पर्य है कि राम की भारतीय लोगों के साथ वार्तालाप काल्पनिक है । राम का भारत में ऐसा कोई भी शिलालेख नही है , जिसमें राम ने भारतीय जनता को संस्कृत भाषा में कोई संदेश दिया हो । इसका मतलब है कि रामायण के सभी पात्र काल्पनिक हैं । आर्यों द्वारा भारतीय लोगों को गुलाम बनाये रखने के लिए ऐसे काल्पनिक काव्यों की रचना भगवानों के नाम पर संस्कृत में की गई । अपने देश में हिन्दी भाषा की उत्पत्ति 1200 वर्ष पूर्व नही थी । यदि रामायण के पात्र हिन्दी बोलते थे तो रामायण की घटना 1200 वर्ष से अधिक की नही है । इसका तात्पर्य है कि राम और अयोध्या का पाँच लाख वर्ष पूर्व कोई अस्तित्व नही था । उक्त वार्तालाप से पुष्टि होती है कि मनुष्य की उपस्थिति भारत में 74 हजार वर्ष से ही है और वह 10 हजार वर्ष पूर्व तक नंगा रहता था , इसलिए 5 लाख वर्ष पूर्व राम का अस्तित्व बताना एक पाखण्ड है । 7 हजार वर्ष पूर्व सिंध सभ्यता के अतिरिक्त भारतवर्ष में कोई भी सभ्यता विकसित नही हुई थी , इसलिये 5 लाख वर्ष पूर्व अयोध्या का अस्तित्व बताना एक पाखण्ड है ।

विदेशी आर्यों का चित्रण वेदों में किया गया है । वर्तमान में यह प्रमाणित हो चुका है कि आर्य लोग यूरोपीय मूल के थे , जोकि विचरण करते हुए मध्य एशिया में आये और मध्य एशिया से उनका आगमन भारत की तरफ हुआ । आर्य लोग लम्बे कद और गौर वर्ण के थे । उनकी भाषा संस्कृत और चरवाहों की अश्लील संस्कृति थी । ये लोग भारतीयों की अपेक्षा युद्ध में अधिक पारंगत थे , जोकि आर्यों और अनार्यों के वेदों में वर्णित संघर्ष से प्रमाणित होता है । भारतीय लोग कद में छोटे एवं काले रंग के थे , जोकि कृषि के कार्य में कुशल थे और उनकी भाषा द्रविड़ थी । आर्यों का रहन सहन घुमक्कड़ एवं पशुपालन था । ठंडे स्थलों में रहने के कारण ये लोग मांस - मदिरा का ही प्रयोग करते थे । ठण्डे देशों में आज भी गौ मांस एवं मदिरा का ही प्रयोग शत प्रतिशत किया जाता है । उन ठंडे देशों में कोई भी व्यक्ति बिना मांसाहार के जिन्दा नही रह सकता है । प्राचीन काल में भारत को छोड़ कर संसार के सभी देशों में गौ मांस का ही भक्षण किया जाता था और भारत में आर्यों के आने के बाद गौ मांस का भक्षण किया जाने लगा और आज भी किया जाता है । आर्य लोगों का रहन सहन घुमक्कड़ होने के कारण वे अपने पालतू पशुओं का ही मांस खाकर जीवन यापन करते थे । प्राचीन काल में जहां गाय मांस को भूना जाता था, वेदों में उसका नाम यज्ञ के नाम से जाना जाने लगा । भारतीय लोगों द्वारा आर्यों की इस प्रथा का विरोध किया जाता था तो उनको धर्म विरोधी घोषित करके राक्षस या दैत्य के नाम से अपमानित किया जाता था ।

वेद , रामायण एवं महाभारत काल में भी ऐसी घटनाओं की कोई कमी नही थी । कुछ लोग वृतान्त देते हैं कि उन युगों में नारी का बहुत ही मान - सम्मान था । जबकि समस्त धार्मिक ग्रन्थों से एक ही बात प्रमाणित होती है कि उन कालों में नारी ऋषि मुनियों की हवस का शिकार रही हैं । ऋग्वेद के अनुसार राजा हरिश्चंद्र के पिता त्रिशंकु ने एक नवविवाहिता पत्नी का अपहरण कर उसके साथ व्यभिचार किया । राजा इंद्र के पुरोहित वृहस्पति की पत्नी तारा को वनस्पतियों का स्वामी वनमंत्री चंद्र भगा ले गया था और उसके साथ व्यभिचार किया , जिससे बुध नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । वही पृष्ठ - 193 (भागवत पुराण) से स्पष्ट है कि स्वायंभुव अर्थात ब्रह्मा के मन में अपनी अवला और मोहक पुत्री वाच के प्रति कामुकता जगी और उसके साथ व्यभिचार किया । मुनियों और उनके पुत्रों ने अपने पिता के कुकर्म पर उन्हें फटकारा , तुमने ऐसा किया जो तुमसे पहले किसी ने नही किया , न तुम्हारे बाद कोई ऐसा करेगा । क्या तुम्हें अपनी पुत्री से विषयभोग करना चाहिए था ? अपने उन्माद को क्या तुम रोक नही सकते थे ? संसार के तुम्हारे जैसे गौरवशाली व्यक्ति के लिए यह प्रशंसनीय नही है ।

यज्ञों में जहाँ एक ओर भयंकर हत्या कांड होता था , वहाँ वास्तव में एक प्रकार का उत्सव बन जाता था । भुने हुए मांस के अलावा मादक पदार्थ भी होते थे । लगभग प्रत्येक यज्ञ के बाद जुआ खेला जाता था और सबसे असाधारण बात यह थी कि इसके साथ - साथ खुले में संभोग भी होता था । इस प्रकार यज्ञ अय्याशी के अड्डे बन गए थे ।

इस प्रकार कोई भी युग रहा हो अर्थात कोई भी काल रहा हो , हर काल में नारी पुरुष की हवस का शिकार रही है । चाहे वह पुरुष कोई भी योनि का रहा हो , चाहे राजा हो , चाहे देवता रहा हो , चाहे ऋषि - मुनि रहा हो ।

4. राम जन्म की गुत्थी

रामायण के प्रथम अध्याय बालकाण्ड में लिखा है कि अयोध्या के राजा दशरथ पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ की तैयारियां कर रहा था । भेड़ , पशु घोड़े , पक्षी , सर्प जैसे प्राणी उस यज्ञ में आहुति के लिए तैयार रखे गए थे । कितना भयंकर लगता है कि पिता बनने की अपेक्षा करने वाले एक व्यक्ति के हित के लिए इतने सारे जीवों का वध किया जाये । क्या कोई ईश्वर ऐसा होता है जो एक व्यक्ति को पुत्र देने के लिए यज्ञ अग्नि में बलि के लिए अनगिनत प्राणी भेट चढ़वाये ? क्या देवता ऐसी हत्याओं से प्रसन्न होते थे ? कहा जाता है कि इन देवताओं का एक राजा था , जो देवेन्द्र कहलाता है । यह कथा उसके निर्दयता , घृणित और विवेकहीन कृत्यों का वर्णन आर्यों की संस्कृति और सभ्यता का परिचय देती है । यज्ञ की कहानी क्या है ? राजा दशरथ की पत्नियों में से एक कौशल्या ने एक वार से यज्ञ के लिए अर्पित घोड़े की गर्दन

काट डाली और सारी रात उस मृत घोड़े से लिपट कर पड़ी रही (बालकाण्ड अध्याय 14) । यदि उनका दैवी स्वभाव ऐसा है तो हम उनसे मानवीय स्वभाव की कल्पना कैसे कर सकते हैं ?

कुदी अरासु प्रेस से प्रकाशित पुस्तक गगन सूर्यम पुस्तक में यज्ञ शास्त्रों में वर्णित यज्ञों के सम्बन्ध में विवरण इस प्रकार दिया है कि राजा दशरथ ने दिन के उदय होने पर अपनी प्रथम पत्नी कौशल्या को अन्य दो पत्नियों सुमित्रा और कैकेयी के साथ यज्ञ करने के लिए तीन पुजारियों अर्थात ऋषियों को भेंट किया और शुल्क प्रदान किया । उन पुजारियों ने अपनी पाशविक काम पिपासा पूरी करने के पश्चात इन स्त्रियों को राजा को वापस सौंप दिया और राजा ने कोई आपत्ति नही की (बालकाण्ड अध्याय 14) । इसके पश्चात वे स्त्रियां गर्भवती हो गईं । मनमथनाथ दातार अपने अंग्रेजी अनुवाद में लिखते हैं कि होथ , अवरयु और युकधा नाम के इन तीन पुजारियों ने यह प्रदर्शन किया । यदि हम गम्भीरता से विचार करें तो यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि यज्ञ की प्रक्रिया शिशुओं के जन्म में सहायक नही हो सकती , बल्कि उन पुजारियों द्वारा ही रानियां गर्भवती की गई । इस बात की पुष्टि इस सबूत से होती है कि उस समय जब यह यज्ञ किया गया , तब दशरथ की आयु साठ हजार वर्ष थी और उसकी साठ हजार पत्नियां थीं । ऐसा कम्ब कवि के अनुसार है , किन्तु वाल्मीकि के अनुसार उसकी तीन सौ पचास रानियां थीं । इससे यह स्पष्ट है कि दशरथ एक जर्जर वृद्ध था और मात्र कामुकता लेपित अस्थि पंजर मात्र था । ये तीन पत्नियां लम्बे समय से बाँझ थीं । उन्हें क्या एक जर्जर नपुंसक और लड़खड़ाते वृद्ध के लिए जीवन की संध्या की वेला में यज्ञ द्वारा गर्भधारण करा पाना सम्भव था ।

राजा दशरथ द्वारा तीनों स्त्रियां एक एक पुरोहित को सौंप दी गई , जिन्होंने अपनी रूचि और इच्छा के अनुसार लम्बे समय तक उनके साथ पूरी तरह सम्भोग किया और तब उन्हें राजा को लौटा दिया और इस काम के लिए उन पुरोहितों को पारिश्रमिक भी प्राप्त हुआ । कौन कह सकता है कि दशरथ उन स्त्रियों के गर्भ का कारण था ? यद्यपि राम , लक्ष्मण , भरत और शत्रुघ्न वास्तव में उन पुरोहितों से पैदा हुए थे , दशरथ से नहीं , फिर भी आर्य धर्म द्वारा इसकी निंदा नही की जाती । शास्त्रों में दिया गया है कि यदि एक ब्राह्मण स्त्री का बच्चा नहीं है तो वह कुछ शर्तों के साथ अन्य पुरुषों से बच्चे पैदा करवा सकती है । महाभारत में इसके समर्थन में एक और आर्य कथा देखी जा सकती है , जिसके अनुसार बिना यज्ञ का प्रदर्शन किये हुए अनेक विधवा स्त्रियां गुरुकुल के व्यास के साथ अवैध सम्बन्ध बनाकर माताएं बन गई थीं । धृतराष्ट्र तथा पाण्डव इसी श्रेणी के उत्पाद थे । ऐसे अनेक अवैध पैदाइशों का विवरण महाभारत में मिलता है ।

सीता के ही जन्म को लें । उसकी माता ने किसी अंजान पति की सहायता से सीता को पैदा किया और फिर उसे एक वन में फेंक दिया । वाल्मीकि ने लिखा है कि सीता ने स्वयं कहा था कि जैसे ही मेरा जन्म हुआ , मुझे वन की धूल में फेंक दिया गया । राजा जनक को मैं पड़ी मिली और उन्होंने मेरा पालन पोषण किया । जब मैं यौवन को प्राप्त हुई तब

मेरे जन्म से जुड़े कलंक के कारण कोई भी राजकुमार मुझसे विवाह करने के लिए तैयार नही था । राजा जनक ने सीता के लिए एक योग्य पति खोज पाने में असफल होने पर अपने मित्र विश्वामित्र से सम्पर्क किया कि वह सीता के लिए एक योग्य वर पाने के लिए उसकी सहायता करें । ऋषि विश्वामित्र पाँच वर्ष से कम आयु वाले राम को लेकर आये और पच्चीस वर्ष की सीता के साथ उसका विवाह कर दिया और सीता ने अपनी से कम आयु वर के लिए एक शब्द भी नही कहा ।

आर्य पुराणों को पढ़कर यह अजीब सा लगता है कि अनेक मामलों में स्त्रियों का गर्भ दूसरे पुरुषों से ठहरा था । इन तथ्यों से यह स्पष्ट है कि यज्ञ को शिशु के जन्म से कुछ लेना देना नही है बल्कि इसका उद्देश्य मदिरा पान करना , मांस खाना और रंगरेलियां द्वारा आपस में मनोरंजन करना है ।

पाँच वर्षीय राम द्वारा ताड़का का वध करने , स्वयं को कहीं छिपा लेने और छः वर्ष में विवाह करने की घटनाओं के साथ राम के जीवन का इतिहास आरम्भ होता है । राम एक साधारण व्यक्ति से भी निम्न कोटि का था । उसने न केवल स्त्रियों की मर्यादा के साथ छेड़खानी की है वरन् अनेक स्त्रियों की हत्या भी की है । उसने बिना तर्कसंगत कारण के एक वृक्ष के पीछे छिपकर कायर की तरह बाली की हत्या कर दी जब बाली दूसरे व्यक्ति के साथ युद्धरत था । रामायण की पूरी कथा में कहीं भी यह दिखाने के लिए कुछ नही है कि राम एक बुद्धिमान व्यक्ति था । ब्राह्मणों ने गैर - ब्राह्मणों के साथ धोखा किया है और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए उनकी अज्ञानता और स्थिति का शोषण किया है । फिर आज की वैज्ञानिक जाग्रति के समय में भी वे वही चाल चल रहे हैं ।

जिस धनुष को राम ने तोडा वह शिव का था । वह धनुष पहले ही टूटा हुआ था । माता के अनुसार जब राम ने धनुष तोडा था तब वह पाँच वर्ष का था उसके पिता के अनुसार उसकी आयु दस वर्ष थी । वाल्मीकि रामायण के अनुसार राम कोई ईमानदार व्यक्ति नही था । अमेरिका वासी औने मैनन की रामायण राम को शिकागोयी डाकू के स्वभाव वाला और सीता को रावण द्वारा स्वेच्छा से अपहरण करवा लेने वाली एक मन्द बुद्धि लड़की बताती है ।

5. अयोध्याकांड

कैकेयी से विवाह करते समय दशरथ ने उसे वचन दिया था कि उससे उत्पन्न पुत्र को अयोध्या का राजा बनाया जायेगा। इससे सम्बंधित कथाएँ बताती हैं कि विवाह के समय यथार्थ में राज्य कैकेयी के अधीन कर दिया गया और दशरथ केवल मात्र उसके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाता था । राम और उसकी माता कौशल्या दशरथ के इस प्रस्ताव से बेखबर नही थे । वृद्ध राजा ने राम को खुलकर अपनी राय दी थी कि भरत का अपने नाना के घर चला जाना राम के राज्याभिषेक के लिए एक शुभ अवसर था । इस कारण भरत को दस वर्ष तक जानबूझ कर उसके नाना के घर में रखा था । दशरथ ने अपनी पूर्व योजना के अनुसार राम को राजा बनाने के लिए भरत को उसके मामा के घर भेज दिया । अचानक एक दिन पूर्व कैकेयी के पूछे बिना जनता में घोषणा करके दशरथ ने दूसरे दिन राम के राज्याभिषेक की तैयारियां कर दीं । मंत्रीगण , महर्षि वशिष्ठ , अन्य गुरुजन तथा स्वयं राम यह पूर्ण रूप से जानते थे कि भरत ही राज सिंहासन का उत्तराधिकारी था । इस पर भी उन्होंने कपटपूर्वक राम के राज्याभिषेक के लिए अपनी स्वीकृति दे दी । कैकेयी ने यह भांपकर दुष्टता के साथ हठ किया कि उसके पुत्र को ही राजा बनाया जाये और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए राम को वनवास दिया जाये । उसे मनाने के लिए दशरथ उसके पैरों पर गिर गया और उससे याचना करते हुए कहने लगा , मैं तुम्हारी इच्छानुसार कोई भी जघन्य कृत्य करने को तैयार हूँ , किन्तु तुम राम को वन में भेजने का हठ मत करो । कैकेयी और मंथरा के उचित और न्यायसंगत कृत्य के पक्ष में पर्याप्त कारण और तर्क विद्यमान हैं । इन सभी पर विचार किये बिना उनको कोसना और उनके विरुद्ध अनगिनत आरोप लगाना अनुचित और अप्रासंगिक है ।

राम इस तथ्य से अवगत था कि यथार्थ में विवाह के समय समस्त राज्य कैकेयी को सौंप दिया गया था । उसने स्वयं भरत को ऐसा कहा था । अयोध्या काण्ड , अध्याय 107 । उसने उन सभी युक्तियों को मौन रहकर स्वीकार किया , जिन्हें उसके पिता ने भरत की अनुपस्थिति में उसके राज्यसिंहासन के लिए रचा था । वह पूरे समय तक स्वयं में शंकालु रहा कि क्या समारोह सफल हो पायेगा अथवा विफल रहेगा । जब दशरथ ने घोषणा की , राज्य तुम्हारे लिए नही है । तुम अवश्य ही वन को जाओ , तब वह मन ही मन शोक कर रहा था । अयोध्या काण्ड , अध्याय 19 । उसने शोक करते हुए अपनी माता से कहा , यह मेरे भाग्य में लिखा है कि मैं राज्य से वंचित रहूँ , राजकुमार के योग्य समस्त सुखों को और स्वादिष्ट मांस के पकवानों को त्याग कर वन को जाऊँ और वहाँ सब्जी और फल खाऊँ । अयोध्या काण्ड अध्याय 20 । भारी मन से उसने अपनी पत्नी और माता को कहा , वह राज्य जो मेरा अपना होने जा रहा था , वह मेरे हाथों से निकल गया । अयोध्या काण्ड अध्याय 20 94 । वह लक्ष्मण के पास गया और अपने पिता दशरथ को अपराधी प्रवृत्ति का बताते हुए बोला , क्या कोई मूर्ख भी ऐसे व्यक्ति को वन में भेजेगा जो सदा उसकी इच्छा का पालन करता आया हो ? अयोध्या काण्ड अध्याय 53 । राम ने सीता को रानी बनाने के लिए उसके साथ विवाह किया किन्तु राजशी परम्परा के अनुसार अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए उसने अनेक विवाह किये । मनमथ नाथ दातार कहते

हैं कि राम की पत्नियां अपने दासों के साथ रहकर आनन्द मनाया करती थीं। उसी प्रकार भरत की पत्नी और कैकेयी की पुत्रवधु शोक में डूब गई।

राम के प्रति कैकेयी का स्नेह सन्देह से परे था , किन्तु राम सदा उसके प्रति कपटपूर्ण और धूर्त रहा। राम सदा कैकेयी के प्रति ईमानदार और स्नेहपूर्ण रहने का दिखावा करता रहा , किन्तु अंत में उसके ऊपर दोषारोपण किया , कैकेयी एक दुष्ट स्त्री है। कैकेयी के मन में दुर्भावना नहीं थी , तब भी राम ने आरोप लगाया कि कैकेयी मेरी माता के साथ दुर्व्यवहार करेगी। वह मेरे पिता की हत्या कर सकती है। इस प्रकार राम ने कैकेयी पर धृष्ठता से आरोप लगाए। अयोध्या काण्ड अध्याय 31 53।

लक्ष्मण के चरित्र में कुछ भी असाधारण नही था और उसे छोटे अवतार की पदवी प्रदान की गई। भरत को राजा के पद से वंचित करने के षड्यंत्र में लक्ष्मण का हाथ था। राम को राज सिंहासन पर बैठाने के लिए लक्ष्मण कुछ भी करने के लिए तन मन से जुट गया। लक्ष्मण ने अपने पिता दशरथ पर अपशब्दों की बौछार कर दी। उसने दशरथ को धूर्त कहा। लक्ष्मण ने सुझाव रखा कि उसके पिता को कारावास में डाला जाये। लक्ष्मण ने विचार प्रकट किया कि उसके पिता का वध कर दिया जाना चाहिए। लक्ष्मण ने यहां तक कहा कि पिता की हत्या करना मनु के अनुसार धर्म है। लक्ष्मण ने कहा कि मैं भरत और उसके साथियों का समूल नाश कर दूंगा। यह ईश्वर की इच्छा थी कि मैं राज सिंहासन नही प्राप्त कर पाया। इस प्रकार राम ने ठण्डी साँस भरी। यह देखकर लक्ष्मण ने राम की आलोचना करते हुए कहा कि केवल कायर और मूर्ख ईश्वर की इच्छा के बारे में बात करते हैं। लक्ष्मण ने चुनौती देते हुए कहा कि मैं दशरथ और कैकेयी को वन में खदेड़ कर राम को राजसिंहासन पर बैठाऊंगा। लक्ष्मण ने राम से कहा कि यदि तुम अपने राज्याभिषेक के लिए मन नही बना पाये हो तो मैं राजसिंहासन को छीनकर शासन करूँगा।

देश को छोड़कर वन की ओर जाते हुए लक्ष्मण ने कहा कि धन्य है वह पुरुष जो वेश्याओं से सजाई गई अयोध्या पर शासन करता है। वन में लक्ष्मण भरत की तरफ गुर्राते हुए बोला कि मैं इसे अभी मार डालूँगा। मैं भरत से अपनी शत्रुता का बदला लेने जा रहा हूँ जिसने राजसिंहासन को हड़प लिया है।

राम ने वन में लक्ष्मण को कहा , क्योंकि हमारे पिता वृद्ध और दुर्बल हो गए हैं और हम वन में आ गए हैं , भरत और उसकी पत्नी बिना विरोध के आनन्द पूर्वक शासन कर रहे होंगे। यह उसके अंदर की नीचता , राजसिंहासन पर अधिकार करने की महत्वाकांक्षा और ईर्ष्या को प्रकट करता है। उसने अपने पिता को मूर्ख और बुद्धिहीन कहा। यदि मैं क्रोधित हो जाऊँ तो मैं अकेला अपने समस्त शत्रुओं को परास्त कर राजा बन सकता हूँ। किन्तु मैं ऐसा प्रजा के कारण नही कर रहा हूँ। इस प्रकार राम ने न्याय और सत्य के विरुद्ध अपमान व्यक्त किया।

6. सीताहरण

लंका में हुए युद्ध के लिए स्वयं राम दोषी थे । यदि राम की आँखों के सामने उनका भाई लक्ष्मण उस निर्दोष युवती सुरुपनखा की नाक काटकर उसको विकृत न करता तो रावण द्वारा सीता का हरण नही किया जाता और लंका का युद्ध नही होता , जिसमें छल कपट , सिद्धांतहीनता और अनैतिकता से लड़ी गई लड़ाई में उस काल के श्रेष्ठ योद्धाओं को अपने प्राण गंवाने पड़े । एक ओर लंका की ओर से युद्ध में वीरगति को प्राप्त शूरवीरों के नाम उजागर किये गए । दूसरी ओर राम की ओर से युद्ध में मारे गए योद्धाओं के नाम पर उस पक्ष द्वारा पर्दा डाल दिया गया । किस प्रकार फूट डालकर भाई को भाई के विरुद्ध , पुत्र को पिता के विरुद्ध खड़ा किया गया । आज भी वही कर रहे हैं । निर्दोष स्त्रियों का वध किया गया और अत्याचार करते समय सीता को भी नही छोड़ा गया । गायों के मांस का भक्षण करने वाले विदेशी आर्य और ऋषि मुनि यज्ञों में निर्दोष पशुओं की बलि के नाम पर हत्या करते थे । ऐसे हिंसक यज्ञों को रोकने का दयालु , अहिंसक और सदाचारी भारतीय मूल के लोग विरोध करते थे और पशुओं की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि भी देकर पशुओं के हत्या काण्ड को रोकते थे तो विदेशी आर्य संस्कृति के घृणित लोग उनके विरुद्ध घृणा उत्पन्न करते थे और उनको राक्षस के नाम से पुकारते थे ।

आखिर उस निर्दोष सुरुपनखा का ऐसा कौनसा अपराध था जिसके लिए उसको इतना भयानक दण्ड दिया गया ? यह एक विचारणीय प्रश्न है । राम , लक्ष्मण तथा सीता जिस वन में आकर ठहरे थे , उस वन में सुरुपनखा का भी वास था । ऐसा नही था कि वह अचानक राम के सामने आकर प्रकट हो गई हो । वह उन तीनों से समय समय पर भेंट करती रहती थी । तभी उसे परिचय प्राप्त हुआ था कि राम राजा दशरथ के पुत्र थे और सीता उनकी पत्नी तथा लक्ष्मण भाई था । सुरुपनखा एक बुद्धिमान युवती थी । वह नख (नाख़ून) से सिर तक सौंदर्य से भरपूर थी । इसलिए उस रूपसी को सुरुपनखा कहा जाता था । वह तथ्य से भली भांति परिचित थी कि राजघरानों में एक से अधिक पत्नियां रखने की प्रथा थी । वह राम से प्रेम करने लगी । एक दिन उसने राम के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रख दिया जो परम्परायुक्त था । राम ने प्रस्ताव की गम्भीरता को नही समझा और न ही सुरुपनखा को समझाया कि वह उससे विवाह करने का विचार त्याग दे । उस मर्यादापुरुष ने मर्यादा को ताक में रखकर , विवाह प्रस्ताव को एक उपहास बना डाला और झूठ बोलते हुए कहा कि लक्ष्मण अविवाहित है , अतः वह उसके साथ विवाह कर ले। तब सुरुपनखा लक्ष्मण के पास गई । पुनः राम के पास गई । इस प्रकार दोनों भाई सुरुपनखा को गेंद की भांति एक दूसरे के बीच नचाते रहे । अंत में जब

सुरुपनखा लक्ष्मण के पास पहुंची तो लक्ष्मण ने प्रेम प्रदर्शन का अभिनय करते हुए उसे अपने निकट बुलाया । निकट आने पर उसने सुरुपनखा को अपने बाहुपाश में जकड़ लिया। राम मूक दर्शक बने यह सब देख रहे थे । तभी लक्ष्मण ने पीछे से कटार निकाली और धोखे से न केवल सुरुपनखा की नाक ही काट डाली बल्कि उसके मुख को कटार के वारों से विकृत कर दिया । भयभीत सुरुपनखा चीखती हुई जान बचाने के लिए भागी । राम और लक्ष्मण खिलखिलाकर हंस पड़े । यही थी राम और लक्ष्मण की संस्कृति , सभ्यता एवं आचरण । कोई गिरे से गिरा व्यक्ति ऐसा अभद्र एवं क्रूर व्यवहार करने के बारे में कभी सोच भी नही सकता । इस प्रकार राम और लक्ष्मण ने मूर्खता का परिचय देते हुए युद्ध की चिंगारी सुलगा दी ।

रामराज्य में नारी का सम्मान नही था । नारी के साथ एक दासी और नौकरानी जैसा नीचता का अनुचित व्यवहार किया जाता था । राम ने स्त्रियों की नाक , कान, छाती आदि काटकर उन्हें विकृत और विकलांग बना दिया और उनको यातना दी । राम ने अनेक स्त्रियों का वध किया । राम ने अनेक अवसरों पर स्त्रियों से झूठ बोला । राम ने यह कहकर स्त्रियों को अपमानित किया कि स्त्रियों पर विश्वास नही किया जाना चाहिए और पत्नी को कोई भेद नही बताना चाहिए । राम सदा स्त्रियों के साथ अनुचित काम वासना का आनन्द उठाना चाहता था । राम ने अनावश्यक अनेक जीवों का वध करके उनका भक्षण किया ।

यदि राम बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर जैसा बुद्धिमान होता तो रामराज्य में नारियों के सम्मान के लिए कानून बनाता । लेकिन राम और लक्ष्मण की मूर्खता उक्त करतूतों से प्रमाणित होती है । यदि बाबा साहेब राम राज्य में होते तो राम और लक्ष्मण को भारतीय दण्ड संहिता की धारा 376 के अधीन बलात्कार के जुल्म में कम से कम 7 वर्ष की सजा से दण्डित किया जाता । लेकिन रामराज्य विदेशी आर्य संस्कृति का राज्य था । जिसमें भारतीय मूलवासियों और स्त्रियों को नीच समझ कर उनके साथ पशुओं जैसा अत्याचार किया जाता था ।

तुलसीकृत रामायण में गोस्वामी तुलसीदास ने साफ साफ कहा है कि नारी में आठ अवगुण सदैव रहते हैं -

साहस , अनृत , चपलता , माया ।

भय , अविवेक , असौच , अदाया ।।

अर्थात - उसमें साहस , चपलता , झूठापन , माया , भय , अविवेक , अपवित्रता और कठोरता खूब भरी रहती है , चाहे कोई भी नारी क्यों न होवे ?

राखिअ नारि जदपि उर माहीं ।

जुबनी सास्त्र नृपति बस नाहीं ।।

अर्थात - स्त्री को चाहे हृदय से लगाकर रखो , तो भी स्त्री , शास्त्र और राजा किसी के वश में नही रहतीं ।

काम क्रोध लोभादि मद , प्रबल मोह कै धारि ।

तिन मह अति दारुण दुखद , माया रूपी नारि ।।

(अरण्यकाण्ड 76)

अर्थात - काम , क्रोध , लोभ , मद आदि प्रबल मोह की धारायें हैं , उनमें अत्यंत कठिन दुःख देने वाली माया रूपिणी स्त्री है ।

सुख चाहहिं मूढ़ न धर्मरता ।

मति थोरि कठोरि न कोमलता ।।

(उत्तरकाण्ड - 161/1)

अर्थात - स्त्री धर्म में तो विश्वास करती नही , किन्तु सुख चाहती हैं , उनमें बुद्धि अधिक नही होती , वे कठोर होती हैं , उनमें कोमलता नही होती ।

बिधिहु न नारि हृदय गति जानी ।

सकल कपट अध अवगुन खानी ।।

(अयोध्याकाण्ड -1,62-2)

अर्थात - स्त्री के हृदय की गति को विधाता भी नही जान सकता , स्त्री का हृदय सभी तरह के कपट , पाप और अवगुणों की खान होता है ।

सहज अपावनि नारि पति सेवत सुभ गति लहें ।

(अरण्यकाण्ड -9)

अर्थात - स्त्री स्वभाव से ही अपवित्र है , पति की सेवा करने से ही उसे सद्गति प्राप्त होती है ।

भ्राता पिता पुत्र उरगारी ।

पुरुष मनोहर निरखत नारी ।।

होई विकल सक मनहि न रोकी ।

जिमि रबिमनि द्रव रविहि बिलोकी ।।

(अरण्यकाण्ड - 28- 4)

अर्थात - हे गरुड़ ! स्त्री मनोहर पुरुष को देखते ही , वह चाहे भाई हो , पिता हो या पुत्र ही क्यों न हो , विकल हो जाती है और अपने मन को रोक नही सकती है , जैसे सूर्य को देखकर सूर्यकांत मणि पिघल जाती है , वैसे ही सुंदर पुरुष को देख कर स्त्री पिघल जाती है ।

महावृष्टि चलि फुटि किआरी ।

जिमि सुतंत्र भए बिगरहि नारी ।।

(अरण्यकाण्ड - 16-4)

अर्थात - भारी वर्षा होने पर क्यारियां इस तरह फूट चलीं , जिस तरह स्वतंत्र हो जाने पर स्त्रियां बिगड़ जाती हैं । इसी प्रकार मनुस्मृति में कहा गया है कि स्त्री कुंवारी रहती है तो पिता रक्षा करता है , युवती होने पर पति रक्षा करता है , बुढ़ापे में पुत्र रक्षा करता है । वह किसी भी अवस्था में स्वतंत्रता की अधिकारी नही होती है । इसलिए रामायण जैसे धार्मिक ग्रन्थों ने नारी को एक घिनौनी वस्तु से अधिक नही समझा है । रामायण काल में नारियों पर बहुत अधिक अत्याचार हुए हैं । जब स्वयं राम नारियों पर अत्याचार करने से नही रुकते थे , तो उनके अधीनस्थ नारियों का सम्मान क्यों करने लगे ? किसी विद्वान ने लिखा है कि पुरातनवादी एवं पुरोहित स्त्रियों के सबसे बड़े शत्रु रहे हैं और स्त्रियां उनकी सबसे बड़ी मित्र । किन्तु प्रश्न तो यह है कि क्या प्रगति और विज्ञान के इस युग में भी हम ऐसी मानवता विरोधी मान्यताओं को केवल इसलिए मानते रहेंगे कि वे कितने प्राचीन काल से प्रचलित रही हैं ?

घायल सुरुपनखा अपने भाई लंका के राजा रावण के पास पहुंची और सारा वृत्तान्त कह सुनाया । रावण का खून खौलना स्वाभाविक था । रावण ने मामा मारीच को हिरण बनाकर भेजा था । वन में जब राम हिरण का पीछा कर रहा था और जब वह मृत्यु की पीड़ा से चिल्ला पड़ा , तब सीता ने लक्ष्मण से विनय की कि वह राम की सहायता के लिए दौड़कर जाये । लक्ष्मण ने उत्तर दिया , मेरे भाई पर कोई विपत्ति नही आ सकती । इस पर सीता क्रुद्ध हो उठी और

कहने लगी , क्या तुम राम की मृत्यु हो जाने पर मेरा शील भंग करने की इच्छा रखते हो ? क्या तुम केवल इसी उद्देश्य से वन में आए हो ? मैं जानती हूँ कि तुम और भरत मेरी इज्जत लूटना चाहते हो । सीता के इस प्रकार के छिछोरेपन पर क्रुद्ध होकर लक्ष्मण चल दिया , उसने उसे नीच और लज्जाहीन एवं मान - मर्यादा रहित बताया । लगता है जैसे कि पहले ही व्यवस्था की गई थी , तुरन्त सन्यासी के वेष में रावण प्रकट हुआ । गुस्से में रावण जब सीता को उठाने गया था और उसने बताया कि वह रावण है और राक्षसों का राजा है । उस समय सीता ने रावण को नापसन्द किया था , किन्तु सीता ने हृदय से रावण का स्वागत तब किया । जब रावण ने अपनी ओर से सीता के नेत्रों , दन्त - पंक्तियों , मुख तथा जंघा के सौंदर्य का बखान करना आरम्भ किया और उसके वक्षस्थल की तुलना ताड के फल के साथ की । जैसे जैसे मैं तुम्हारे शरीर के इन अंगों को निहारता हूँ , मेरा भावावेश अनियंत्रित हो जाता है । तुम्हारा सौंदर्य मेरे हृदय पर प्रहार करता है , जैसे नदी की लहरें तट पर प्रहार करती है । इस प्रकार वह सीता के शरीर के अंग अंग का वर्णन करता रहा । यदि सीता यथार्थ में पतिव्रता स्त्री थी , महान चरित्रवान थी , जिसका कभी अनुकरण कर सकें , तब उसे क्या करना चाहिए था ? क्या कोई व्यक्ति हमारी स्त्रियों को ऐसे भ्रष्ट और नीच ढंग से सम्बोधित कर सकता है ? यदि वह ऐसा करे तब क्या वह बच सकता है ? किन्तु सीता ने क्या किया ? रावण के मुख से अपने सौंदर्य का वर्णन सुनकर वह स्वयं को खो बैठी और उसने रावण को भोजन खिलाया ।

रावण को भोजन कराने के बाद उसने बताया कि वह राजा जनक की पुत्री और राम की पत्नी है । उसने अपनी वास्तविक आयु की जगह झूठी आयु बताई । उसने कहा कि जब वह वन में आई और उस समय जब वह रावण के साथ बात कर रही थी , उसकी आयु 13 वर्ष की थी । तब उसने बताया कि वह विवाह के बाद अयोध्या में 12 वर्षों से रह रही थी । वह फिर बोली कि जब वह वन में आई तब उसकी आयु 18 वर्ष थी । यह कैसी समंजस्याता है ? वह विवाह के बाद 12 वर्ष अयोध्या में रही । उसके अनुसार वयस्क होने के बाद वह अपने पिता के पास अविवाहित कन्या के रूप में लम्बे समय तक रही । किन्तु रावण की उपस्थिति में जो गणना उसने प्रस्तुत की उसके अनुसार उसका विवाह 6 वर्ष की आयु में हुआ । इसको मान लें तो क्या वह शीघ्र ही वयस्कता प्राप्त कर अनेक वर्षों तक अपने पिता के घर में रही ? उसने इस प्रकार बकवास क्यों की ? अपनी अधिक आयु को छिपाने के लिए उसने ऐसा किया । तब सामान्य तौर पर उसकी आयु 45 वर्ष से अधिक होगी । वयस्क होने के बाद वह अनेक वर्षों तक अविवाहित रही , अतः विवाह के समय वह बीस वर्ष की रही होगी । 12 वर्ष अयोध्या में और 13 वर्ष वन में और विवाह के समय आयु 20 वर्ष इसलिए आयु 45 वर्ष हुई । लक्ष्मण ने इसकी पुष्टि की थी । उसने कहा था कि सीता अधिक आयु की थी और उसका पेट फ़ूला हुआ था । उसने यह कब कहा ? सुरुपनखा राम से प्रेम करती थी और उसके साथ विवाह करना चाहती थी । राम ने कहा कि वह पहले से विवाहित था और वह लक्ष्मण के पास जाए जो कंवारा था । इसके अनुसार वह लक्ष्मण के पास गई । किन्तु लक्ष्मण ने इस आधार पर विवाह अस्वीकार कर दिया कि वह दास था और उसने पुनः

सुरुपनखा को यह कहते हुए राम के पास भेज दिया कि राम की पत्नी अधिक आयु की बढ़े हुए पेट की स्त्री है । कुछ भी हो , जैसा कि कथा बताती है , सीता अधिक आयु की थी जब रावण उससे मिला ।

जब रावण उसे गोद में बैठाकर ले जा रहा था , तब वह आधी नग्न थी और उसने स्वयं आधे शरीर का ऊपरी भाग खोला हुआ था । रावण ने सीता के वक्षस्थल और जंघा की प्रशंसा की , तो सीता ने रावण का स्वागत किया । जैसे ही सीता रावण के महल में उतरी उसका रावण के प्रति प्रेम और भी बढ़ गया । रावण ने सीता से कहा कि आओ हम मिलकर आनन्द उठायें किन्तु सीता अपने नेत्रों को बन्द करके सिसकियाँ लेने लगी । सीता ने उत्तर दिया कि तुम अपनी इच्छानुसार इस शरीर का आलंगन करने के लिए स्वतंत्र हो । मेरे लिए इसकी रक्षा करना आवश्यक नही है । मुझ पर कलंक नही लगना चाहिए कि मैंने गलती की है ।

अपनी बहिन के प्रति अपमान , निर्दयता और पाश्विक व्यवहार से उत्पन्न उत्तेजना को सहन न कर पाने के कारण , रावण प्रतिक्रिया स्वरूप सीता का हरण करके उसे लंका ले गया । उसने लंका में लाकर न तो सीता की नाक काटी और न ही उसके चेहरे को विकृत किया । रावण ने अपनी भतीजी के संरक्षण में नारी सम्मान के साथ अशोक वाटिका के रमणीय वातावरण में सीता के रहने की व्यवस्था करवाई । उसको यह कार्यवाई न तो सीता के प्रति प्रेम और न ही दूसरे व्यक्ति की पत्नी को अपमानित करने के उद्देश्य का प्रतिफल थी ।

वाल्मीकि ने कहा कि अत्यधिक उत्तेजित किये जाने पर भी , संयत न हो पाने वाले क्रोध के रहते हुए भी और अदम्य उत्तेजना होने पर भी , रावण ने बदले की भावना से सीता के कान , वक्ष तथा नाक विकृत करने के बारे में सोचा तक नहीं , जबकि राम और लक्ष्मण द्वारा सरूपनखा के साथ क्या क्या नही किया गया ।

हनुमान ने स्वयं यह कहा था कि रावण के महल में समस्त स्त्रियों ने स्वेच्छा से उसकी पत्नियां बनना स्वीकार किया । उसने किसी भी स्त्री का उसकी इच्छा के बिना अथवा जबरन स्पर्श तक नही किया ।

रावण देवताओं एवं ऋषियों से घृणा करता था । ऐसा क्यों था ? क्योंकि वे यज्ञ के नाम पर पवित्र अग्नि को भेंट चढ़ाने के लिए निर्दोष एवं मूक निरीह पशुओं का निर्दयता से वध करते थे । इसके अतिरिक्त और अन्य किसी कारण से रावण उनसे घृणा नही करता था । वाल्मीकि ने स्वयं कहा था कि रावण एक अच्छा पुरुष था । वह उदार हृदय और सुंदर था । किन्तु वह ब्राह्मण की कटु आलोचना करता था , जब वह उनको यज्ञ करते और सुरापान करते हुए देखता था ।

वास्तव में अधिक आयु की होने पर भी सीता ने अपनी वास्तविक आयु क्यों छिपाई , जबकि रावण ने हंसकर उसके अंग अंग की प्रसंशा की । इस पर जरा विचार करें । क्या एक पतिव्रता और दैवी स्त्री की यही कथा है ? तब क्या हुआ ? उसने भेद खोला कि वह रावण था और उससे अनुरोध किया कि वह उसके साथ लंका चले । सीता ने अस्वीकार कर दिया । अब उसने एक हाथ से उसे बालों से पकड़ा और दूसरा हाथ उसकी जंघा पर रखकर उसे ऊपर उठा लिया और

उसे अपनी जंघा पर बैठाकर वह उसे हर ले गया । वह चिल्लाई । लेकिन यह सत्य नही है । क्योंकि रावण को दो श्राप मिले थे । पहला था कि यदि उसने स्त्री की स्वीकृति के बिना उसका स्पर्श किया तो उसका शरीर भस्म हो जायेगा और दूसरा श्राप था कि उसका सिर हजारों टुकड़ों में कटकर बिखर जायेगा । ऐसे श्रापों के रहते , यदि सीता को ले जाते समय कोई शारीरिक सम्पर्क होता तब रावण का सिर और शरीर भस्म होकर राख बन जाता । किन्तु उसके साथ ऐसा कुछ नही हुआ । वह लंका में सुरक्षित पहुँच गया और सीता को महल में घुमाया । वहाँ भी उसे कुछ नही हुआ । तब इसका क्या अर्थ है ? ऐसा कोई भी प्रमाण उपलब्ध नही है जो यह सिद्ध कर सके कि रावण सीता को जबरन हर ले गया था । रावण सीता को जबरन हर कर भी नही ले जा सकता था , क्योंकि सीता इतनी शक्तिशाली थी कि वह शिवजी के धनुष को घर की सफाई के वक्त एक कोने से उठाकर दूसरे कोने में रख देती थी और रावण इतना कमजोर था कि वह शिवजी के धनुष के नीचे दबी अपनी ऊँगली को भी मुश्किल से निकाल पाया था . इसलिए इतनी शक्तिशाली सीता का इतने कमजोर रावण द्वारा जबरदस्ती अपहरण करना नामुमकिन है । मेरे इस निष्कर्ष पर रूढ़िवादी क्रोध से भड़क सकते हैं , किन्तु मैं अपने विचार बदलने वाला नही हूँ ।

रावण जब लंका में सीता के साथ था , तब उसने कहा कि हे सीता ! तुम लज्जा न करो । हमारा मिलन दैवी व्यवस्था है । समस्त ऋषिगण इसका स्वागत करते हैं । सीता ने उत्तर दिया , तुम मेरे शरीर का अपनी रूचि अनुसार उपयोग करो । मैं अपने शरीर की परवाह नही करती ।

आगे रामायण में कहीं भी ऐसा नही मिलता कि उसके लेखक ने सीता को एक पतिव्रता स्त्री अथवा नायिका अथवा बुद्धिमान स्त्री अथवा एक ऐसी स्त्री जो अपने सतीत्व को सुरक्षित रखने की इच्छुक स्त्री बताया है । यह सुनकर उसका श्रेष्ठ प्रतीत होगा कि वह अग्नि कुण्ड में प्रविष्ट हो गई , किन्तु इसमें कोई आश्चर्य नही है क्योंकि हम आज भी मन्दिर - समारोहों में वेश्याओं तक को अग्नि पर चलते देखते हैं । न केवल वेश्याएं ही ऐसा करती हैं , वरन् दुष्ट और बदमाश लोग आज भी अग्नि पर चलते हैं । यदि हम गम्भीरता से वाल्मीकि रामायण का अध्ययन करते हैं तो पाते हैं कि सीता उस समय गर्भवती थी ।

7. किष्किन्धाकाण्ड

सीता के हरण के बाद राम और लक्ष्मण विलाप करते हुए वन वन भटकने लगे । अपनी वीरता की शेखी बखारने वाले वे दोनों योद्धा अपने शौर्य को भूल गए । रोते - चिल्लाते कायरों की तरह जटायु के पास पहुँचे । उस समय जटायु मरणासन्न अवस्था में था । वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड के 68 वें सर्ग के श्लोक 32 , 33 से विदित है कि

बलशाली तथा यशस्वी राम ने जटायु की तृप्ति के लिए लक्ष्मण के साथ वन में जाकर खूब मोटे - मोटे और बड़े - बड़े मृगों को मारा और उनका मांस निकाला तथा उस मांस के पिण्ड बनाकर उस पिण्ड को दिवंगत जटायु पक्षी की तृप्ति के लिए कुश की हरियाली पर बिखेर दिया । यही बात आध्यात्म रामायण के आरण्य रा. सर्ग 8 में इस प्रकार कही गई है कि श्लोक 38 , 39 से विदित है कि राम ने जटायु का दाह करने के लिए लक्ष्मण के साथ स्नान किया । मृग मारकर टुकड़े कर हरियाली पर बिखेर दिए ताकि सब पक्षी खाएं और जटायु तृप्त हो जाएँ ।

साधारण मनुष्य की तरह रोते बिलखते दोनों भाई वानर जाति तथा अन्य जनजातियों की शरण में जाकर सहायता के लिए गुहार लगाने लगे । दोनों वनवासी भाई जब शबरी के आश्रम में पहुँचे तो शबरी ने दोनों भाइयों का स्वागत फल फूलों से किया । ब्राह्मणी लोगों द्वारा प्रचार किया जाता है कि राम ने शबरी के सम्मान में झूठे बेर खाये थे और शबरी के अपमान में लक्ष्मण ने शबरी के झूठे बेर फेंके थे । इस माध्यम से ब्राह्मणी लोग यह बताते हैं कि तुम लोग नीच वर्ण के हैं , फिर भी हम तुम्हारी नीच औकात दिखाने के साथ साथ कुछ सम्मान भी करते हैं । ये लोग इस प्रकार की नीच और घटिया सोच के माध्यम से शूद्र लोगों में मनोविकार उत्पन्न करते रहते हैं , जिससे शूद्र लोग हमारे चरण स्पर्श वाले बने रहें और हमारी गुलामी से इंकार न करें । ब्राह्मणी लोगों की शूद्र लोगों को नीचा दिखाने के लिए ये मन गढ़ंत बातें हैं । किसी भी रामायण में ऐसा नही लिखा है कि राम ने शबरी के झूठे बेर खाये थे । राम और तुलसीदास ने शबरी के माध्यम से यह कहलवाया है कि मैं नीच जाति की हूँ और नारी जाति भी नीच से नीच और अपवित्र होती है , उससे भी मैं नीच हूँ । इस प्रकार राम और तुलसीदास ने शबरी के माध्यम से नारी जाति और शूद्रों अर्थात भारतीय लोगों का अपमान किया है , जोकि राम और तुलसीदास की नीच और घटिया सोच को दर्शाता है ।

राम ने किष्किन्धा पर्वत पर जाकर सुग्रीव के साथ मित्रता कर ली यह जानते हुए कि वह धोखेवाज है और उसने अपने भाई की हत्या करवाने तथा राजसिंहासन पर कब्जा करने के विचार से उसके साथ सम्पर्क बनाया था । बाली के विश्वासघाती भाई सुग्रीव के लिए उसने छुपकर पीछे से वार करके बाली की हत्या कर दी । यही राम जो आमने सामने बाली के साथ युद्ध करने का साहस नही कर पाया , अज्ञानी लोग उसको वीर योद्धा के रूप में अभिवादन करते हैं और ब्राह्मण लोग बहुत जोर शोर से उसकी प्रशंसा करते हैं ।

बाली का वध करते हुए अपने कृत्य को न्यायसंगत बताते हुए राम ने अपनी सफाई में बाली को कहा , नर - पशुओं के सम्बन्ध में धर्म का पालन करना आवश्यक नही है और उसने इस आधार पर बाली का वध कर दिया कि बाली ने विवेकपूर्ण आचरण नही किया जो उसे करना चाहिए था । बाली पर लगाए गए आरोपों का बाली से स्पष्टीकरण मांगने का प्रयास किये बिना , राम ने बाली का वध कर दिया और स्वार्थी सुग्रीव की बातों पर पूरी तरह से विश्वास कर लिया ।

अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए राम स्वयं उस सुग्रीव के सामने झुक गया जो अयोग्य और विश्वासघाती था और कहा कि मुझे स्वीकार करो , मुझ पर दया करो ।

बाली अपने भाई का वध नही करना चाहता था । सुग्रीव ने अपने भाई बाली के साथ अनावश्यक झगड़ा कर लिया । बाली स्वभाव से अहिंसक था । अतः उसमें कोई दोष नही था । अपनी पत्नी को वचन देकर कि वह अपने भाई का वध नही करेगा , वह युद्ध के लिए उतरा । बाली एक धैर्यवान और शक्तिशाली पुरुष था । वह बहुत ही ईमानदार और न्यायप्रिय पुरुष था । खुले और आमने सामने के युद्ध में उसे कोई पराजित करने का साहस नही कर सकता था । वह अनेक महापुरुषों का प्रिय मित्र था । उसने गलती से राम को ईमानदार पुरुष समझा । बाली की मृत्यु पर सुग्रीव उसके सद्गुणों के बारे में बोला कि मैं ऐसे श्रेष्ठ भाई को खोने के बाद जीवित नही रहूंगा । मैं अग्नि में कूद कर प्राण त्याग दूंगा । ऐसे श्रेष्ठ पुरुष का वध करने पर राम ने सफाई देते हुए कहा कि हिंसक पशु को मारने में धर्म के नियमों का पालन करना आवश्यक नही है । क्या बाली एक हिंसक पशु था ?

8. सुंदरकाण्ड

जब हनुमान सीता की खोज में निकले , उस रास्ते में भारत और श्रीलंका के मध्य समुद्र की चौड़ाई लगभग 40 किमी थी , जबकि तुलसीदास अपनी रामायण में भारत और श्रीलंका के बीच सौ योजन अर्थात चार सौ कोस अर्थात 1200 किमी की चौड़ाई बता कर अपने आपको मूर्ख और महान झूठा साबित करते हैं । किंतु तुलसीदास ने रामायण में भयंकर ही सफेद झूठ और पाखण्ड भरी बातें लिखी हैं , निर्जीव वस्तुओं को पंखों के साथ उड़ने की , निर्जीव वस्तुओं और पशु - पक्षियों को मनुष्यों से बात करने की , पानी को मनुष्य से बात करने की , पर्वत को समुद्र के कहने पर समुद्र से निकलने की और हनुमान का सम्मान करके समुद्र में पुनः डूबने की मनगढ़ंत और सफेद झूठी बातें लिखी हैं , जोकि किसी भी समझदार व्यक्ति के गले में नही उतरती हैं । तुलसीदास अपनी रामायण में लिखते हैं कि उस समुद्र में सौ सौ योजन के बहुत विशाल मगर , घड़ियाल , मच्छ और सर्प थे । तुलसीदास के ऐसे सफेद झूठ को किसी भी व्यक्ति को पचाना नामुमकिन है । भारत और श्रीलंका के मध्य 40 किमी की जगह में सौ योजन अर्थात चार सौ कोस अर्थात 1200 किमी के विशाल शरीर वाले जीव - जन्तु होना असम्भव है । इससे सिद्ध होता है कि तुलसीदास ने भंग के नशे में भारतीय लोगों को मनगढ़ंत कहानियों में उलझाने के लिए एक काल्पनिक और मूर्खता भरी बातों की एक झूठी बकवास लिखी है , जिसका समाज के लिए कोई भी औचित्य नही है । ऐसी सफेद झूठों से तुलसीदास ने मूर्खतापूर्ण और दिमाग के दिवालियेपन की मानसिकता का परिचय दिया है ।

वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड 36 वां सर्ग श्लोक 41 से विदित है कि जब हनुमान सीता के पास अशोक वाटिका में पहुंचे तो उन्होंने राम के वियोग के सम्बन्ध में सीता को इस प्रकार कहा कि राम आजकल वियोग में न मांस खाते हैं , न ही शराब पी रहे हैं । इसका तात्पर्य यह हुआ कि राम ने सीता के वियोग में मांस खाना और शराब पीना बन्द कर दिया था अर्थात राम मांस और शराब भक्षी थे । जबकि ब्राह्मणी लोग प्रचारित करते हैं कि राम माँस और शराब का सेवन नही करते थे , जोकि ब्राह्मणी लोगों का एक सफेद झूठ है । इसके साथ ब्राह्मणी लोगों का ये भी सफेद झूठ है कि हनुमान ने लंका दहन किया था । ब्राह्मणी लोगों ने झूठ और पाखण्ड का जाल बिछाकर भारतीय लोगों को सार्थक जीवन नही जीने दिया । इन लोगों ने झूठ और पाखण्ड के नाम पर भारत के अशिक्षित और आस्थावादी शिक्षित लोगों को अभी तक खूब मूर्ख बनाया है । ये लोग रावण की सोने की लंका की , हनुमान के उड़ने की , रामसेतु इत्यादि की मनगढ़ंत कहानियों से भारतीय लोगों को भ्रमित करते रहे हैं । ये भारतीय लोगों को अखण्ड विश्वास दिलाते हैं कि सोने की लंका को हनुमान ने जला दिया था । जबकि सोना एक कीमती और ठोस धातु है , आभूषण बनाने के लिए जिसे हजारों डिग्री तापक्रम पर द्रवित करते हैं । सोने से आभूषण बनाने के लिए सोने को लगभग 1064 डिग्री सेंटीग्रेट के तापक्रम पर पिघलाया जाता है । सोना 1064 डिग्री सेंटीग्रेट पर पिघल कर द्रवित स्थिति में आता है और ठण्डा होने पर पुनः ठोस रूप में आता है । ब्राह्मणी लोगों का मत है कि लंका का निर्माण शिवजी ने लाखों वर्ष पूर्व कराया था । जबकि सोने की खोज को 5 हजार वर्ष और श्रीलंका में मनुष्य की उपस्थिति को 34000 वर्ष ही हुए हैं तो सोने की लंका का निर्माण लाखों वर्ष पूर्व किसके लिए कराया था और वहाँ पर लाखों वर्ष पूर्व कोई मनुष्य जाति ही नही थी , तो उसका निर्माण कैसे हुआ ? 5000 वर्ष पूर्व कोई सोने की खान तो थी नही । कुछ नदियों की रेता को छान कर उसमें से जो सोने के कण निकलते थे , उनको पत्थर से पीट कर आभूषण बनाते थे । उस समय सोने निकालने की न तो कोई तकनीक थी और न ही कोई खान थी तो सोने की लंका के लिए लाखों वर्ष पूर्व हजारों टन सोना कहाँ से आया । लेकिन राम के कार्यकाल को कुछ लोग 10000 वर्ष बताते हैं तो 10 हजार वर्ष पूर्व लंका का निर्माण शिवजी ने किया होगा । एक तरफ ब्राह्मणी लोग शिवजी को सृष्टि करता मानते हैं और सृष्टि की रचना अरबों वर्ष पूर्व हुई थी तो शिवजी 10 हजार वर्ष पूर्व सोने की लंका का निर्माण कैसे कर सकते हैं ? यदि शिवजी के पास हजारों टन सोना होता तो शिवजी सोने का महल यदि बनाते तो श्रीलंका के स्थान पर भारत में बनाते । क्योंकि शिवजी भारत के लोगों के शुभ चिंतक थे । राम ने लंका में पहुँचने के लिए रामसेतु पुल का निर्माण करवाया था , तब राम लंका में पहुँचे थे । शिवजी ने लंका जाने के लिए कोई भी पुल का निर्माण नही करवाया था , तो शिवजी का लंका में पहुंचना असम्भव था । जब शिवजी का लंका में पहुंचना असम्भव था , तो सोने की लंका का निर्माण भी असम्भव था । इस प्रकार शिवजी द्वारा सोने की लंका का निर्माण एक पाखण्ड है ।

ब्राह्मणी ग्रन्थ और उनके लोग रावण और कुम्भकर्ण के शरीर को पहाड़ जैसा बताते हैं । यदि उनके शरीर पहाड़ जैसे थे तो उनकी लंका का आकर पहाड़ से भी विस्तृत होगा । उस पहाड़ समान सोने की लंका के निर्माण में करोड़ों टन सोना लगा होगा । इतना सोना उस समय कहाँ से आया , जबकि इतना सोना तो पूरे संसार में आज भी नही है और उस समय सोने की कोई खोज भी नही थी । इससे पुष्टि होती है कि श्रीलंका में सोने की लंका का होना एक पाखण्ड है । ब्राह्मणी लोग कहते हैं कि हनुमान ने सोने की लंका का दहन किया था । सोने के पिघलने का तापक्रम लगभग 1064 डिग्री सेंटीग्रेट और जलने का तापक्रम लगभग 2970 डिग्री है । हनुमान की पूँछ में आग लगाने के लिए कपड़े प्रयोग किये गए । किसी कपड़े को जला कर सोने के पास ले जा कर क्या सोना जलने लगेगा ? एक अग्नि कुण्ड में एक बन्दर को डाला जाये और बन्दर के वजन के बराबर सोने के टुकड़े को डाला जाये तो उसमें केवल बन्दर जलेगा , सोना नही जलेगा । प्राणियों का शरीर अधिकतर पानी से बना होता है जोकि 100 डिग्री के ऊपर वाष्प में परिवर्तित होने लगता है और सोना एक धातु है जो 2970 डिग्री के तापक्रम पर गैस में परिवर्तित होता है । हनुमान की पूँछ में आग लगाने से हनुमान ही जलेगा , सोने की लंका पर कोई भी प्रभाव नही पड़ेगा । हनुमान द्वारा सोने की लंका नही जलने के कारण उसका अस्तित्व लंका में होना चाहिए । अभी तक पूरे श्रीलंका में सोने की लंका का कोई भी अस्तित्व नही मिला है । यदि सोने की लंका श्रीलंका के लोगों को प्राप्त हो जाती तो दुनिया में सबसे मालदार श्रीलंका के लोग ही होते ।

यदि सोने की लंका में हनुमान द्वारा आग लगती तो सोने का तापक्रम लगभग 3000 डिग्री होता और उससे सोने की ऑक्साइड गैस वायुमण्डल में मिलती और वायुमण्डल में ऑक्सीजन की मात्रा समाप्त हो जाती । 3000 डिग्री तापक्रम के वातावरण में कोई प्राणी जीवित नही रह सकता था । सोने की गैस भारी होती है ऑक्सीजन गैस हल्की होती है । इसलिए सोने की वाष्पित गैस वायुमण्डल में नीचे रहेगी । ऑक्सीजन ऊपर रहेगी । मनुष्य की श्वसन क्रिया में सोने की गैस जायेगी । सोने की भाप से मनुष्य सैकंडों में पिघल कर राख में परिवर्तित हो जायेगा और वहाँ उपस्थित सभी लोग मर जायेंगे । परन्तु लंका दहन के समय किसी श्रीलंका के राक्षस को मरते हुए नही बताया है । ब्राह्मणी लोगों का ये पाखण्ड अनपढ़ और आस्थावादी पढ़े लिखे मूर्ख लोगों तक ही चल सकता है । बुद्ध और भीम के विज्ञानी लोगों पर नही चल सकता ।

9. लंकाकाण्ड

रावण से युद्ध करके सीता को वापिस लाने के लिए राम का पुल बनाने का निर्णय एक मनगढ़ंत कथा है । राम की सेना में हनुमान थे , रामायण के कथानुसार जो उड़ कर लंका जा सकते थे । रीछ और वानर नही उड सकते थे। किन्तु हनुमान अपने आकार को कितना भी छोटा और बड़ा कर सकते थे , जैसे सुरसा के मुंह से निकलने के लिए छोटे हो गये थे और सूर्य को मुंह में लेते समय सूर्य से भी बडे। रामादल की सेना ज्यादा से ज्यादा 5 हजार से ज्यादा नही होगी । जब हनुमान सूरज को निगल सकते हैं और पहाड़ों को उठा सकते हैं तो हनुमान को रामादल की चीटीं के बराबर सेना को लंका तक पहुंचाने में क्या दिक्कत थी । रामादल की सम्पूर्ण सेना हनुमान की पीठ पर सवार हो जाती और हनुमान पूरी सेना को उड़ कर लंका पहुंचा देते । समुद्र पर पुल बनाने की जरूरत ही नही थी । दूसरा उपाय ये था कि भारत और श्रीलंका के बीच समुद्र की चौड़ाई मात्र 40 किमी है , हनुमान अपना रूप थोडा सा बढ़ा कर लेट जाते और पूरी सेना उनकी पीठ से निकल जाती । हनुमान बहुत ही बल , बुद्धि और विद्या से पूर्ण थे तो हनुमान ने राम की सेना को लंका में पहुंचाने के लिए अपनी बल , बुद्धि और विद्या का प्रयोग करके राम के कलेश और विकार दूर क्यों नही किये । जो हनुमान अपने मालिक राम के दु:ख दूर नही कर सकता , वह आम जनता के दु:ख दूर कैसे कर सकता है ? यदि हनुमान राम की समस्या को हल कर देते तो राम को समुद्र से अनुनय विनय नही करनी पड़ती और पुल बनाने की मेहनत भी नही करनी पड़ती । इससे ये ही प्रमाणित होता है कि हनुमान न तो उड़ सकते थे और न ही उनके पास कोई बल , बुद्धि और विद्या थी । यह बिल्कुल सत्य है कि बल , बुद्धि और विद्या के नाम पर हनुमान रूपी पाखण्ड फैलाया हुआ है । अपने देश में 1200 वर्ष पूर्व हिन्दी भाषा लिखना और पढ़ना कोई नही जानता था । हिंदी भाषा का उद्गम ही 8 वीं शताब्दी में हुआ था । भालू , बंदरों के वंशज वर्तमान में हिन्दी न तो पढ़ सकते है और न ही लिख सकते हैं । यदि राम के समय में भालू और बंदर लिख और पढ़ सकते थे तो आज उनकी संतान पढ़ने लिखने में मनुष्य से आगे होती । भालू , बंदरों को हिन्दी सिखाने बाला राम के काल में कोई शिक्षक होता तो वह मनुष्यों को भी हिन्दी सिखा सकता था और राम के समय से ही अपने देश में हिन्दी होती । इतिहासकारों ने सबूतों के साथ लिखा है कि हिन्दी लिपि 8 वीं शताब्दी से ही आरम्भ हुई है , इसलिए रामायण ही गलत है । जब रामायण गलत है तो पत्थरों पर राम नाम की हिन्दी लिपि लिखना भी एक पाखण्ड है । अब बताइये कि समुद्र पर पुल बनाते समय भालू और वानर पत्थरों पर "राम" नाम लिख सकते थे । राम का नाम लिखे पत्थरों को पानी पर तैराना लोगों को मूर्ख बनाने के लिए एक पाखण्ड है । हवा भरी बॉल को पानी पर डालते हैं , तो वह पानी पर तैरती रहेगी , जब तक उसके अंदर वायु है । यदि पानी पर तैरने वाला पत्थरों का ऐसा कोई पुल

होता तो आज भी वह पानी पर तैरता । इससे सिद्ध होता है कि रामसेतु का निर्माण और हनुमान का उड़ना दोनों पाखण्ड है ।

लक्ष्मण शक्ति के प्रसंग में तुलसीदास ने लिखा है कि लक्ष्मण को शक्ति लगने के उपरांत मेघनाथ के समान सौ करोड़ योद्धा उन्हें उठा रहे थे , परन्तु उनसे वे नही उठे । मूर्ख तुलसीदास को इतनी बड़ी गप्पें लिखते हुए शर्म नही आई । ऐसे मूर्ख की कुछ महान मूर्ख लोग रात और दिन पूजा और सम्मान देकर देश को काल के गाल में धकेल रहे हैं । देश के बड़े बड़े लोग जब मूर्ख तुलसीदास के ऐसे महामूर्ख शिष्यों से मार्गदर्शन लेंगे , तो देश को गर्त में जाने से कोई भी नही रोक सकता । तुलसीदास ने ये भी गणना नही की , कि जब लक्ष्मण को एक करोड़ लोग उठाएंगे , तो उन लोगों को लक्ष्मण को उठाते वक्त खड़ा होने के लिए कितनी जगह की आवश्यकता होगी और लक्ष्मण के शरीर की लम्बाई कितनी होगी । लक्ष्मण के शरीर को दायें और बाएं दोनों तरफ खड़े होकर एक करोड़ में से पचास पचास लाख साधारण लोग दोनों तरफ से उठाते हैं तो उनको खड़ा होने के लिए कम से कम 75 लाख फुट जमीन की आवश्यकता होगी अर्थात 25 लाख मीटर अर्थात 2500 किमी तक की जगह की आवश्यकता होगी । यदि लक्ष्मण की लम्बाई 2500 किमी थी , तो लक्ष्मण के पैर श्रीलंका में और सिर हिमालय पर्वत पर होना चाहिए । जब लक्ष्मण का सिर हिमालय पर्वत पर था , तो लक्ष्मण हिमालय पर्वत से हाथ बढ़ाकर दवा का सेवन कर लेता और हनुमान को दवाई के लिए हिमालय पर्वत उठाने की आवश्यकता नही होती । इस प्रकार की महान गप्पें तुलसीदास द्वारा रामायण में लिखी गई हैं ।

ब्राह्मणी लोग हनुमान को बल , बुद्धि और विद्या का भण्डार मानते हैं , परन्तु हनुमान सबसे मूर्ख था । जब श्रीलंका के हकीम ने उसको हिमालय से संजीवनी ब्यूटी नामक दवाई लाने के लिए कहा था , परन्तु हनुमान इतना मूर्ख था कि जरा सी दवाई के लिए हिमालय पर्वत को ही उठा लाया । हनुमान से बुद्धिमान तो आज के लोग हैं । डॉक्टर दवाई लिखता है तो पूरी दुकान को न उठाकर लिखी हुई दवाई को ही लाते हैं । जब उस समय के जानवर पत्थरों पर राम नाम हिंदी में लिख सकते थे और पर्वत बातें कर सकते थे तो हनुमान एक कागज पर हकीम से दवाई लिखवा कर ले जाते और उस कागज को हिमालय को बता देते तो हिमालय अपने स्वयं के उठने के स्थान पर मंगाई गई ब्यूटी को ही हनुमान को दे देते , परन्तु हनुमान में कोई बुद्धि ही नही थी , इसलिए एक मूर्ख की तरह हिमालय पर्वत को उठाकर लाया था , इससे पुष्टि होती है कि हनुमान एक बुद्धिहीन जानवर था । यदि हनुमान में बल होता तो राम को लंका में पहुँचने के लिए पुल की आवश्यकता ही नही होती , वह रामादल को अपनी पीठ पर बैठाकर एक सैकण्ड में लंका में पहुंचा देता । रावण भी तो भारत में बिना पुल के आता जाता था । रामायण में ऐसा कहीं भी नही लिखा है कि हनुमान ने किसी से शिक्षा प्राप्त की थी । इस प्रकार पुष्टि होती है कि हनुमान बल और विद्या

से स्वयं ही हीन था , तो वह दूसरों को बल और विद्या कैसे दे सकता है । इस प्रकार तुलसीदास सहित सम्पूर्ण रामादल मूर्खों की फ़ौज थी ।

बंगाली रामायण के लंकावतार सुत्त में यह लिखा है कि रावण एक द्रविड़ राजा था जो बौद्ध धम्म में दीक्षित हो गया था और वह प्लैटो और सुकरात जैसा दार्शनिक था । बौद्ध साहित्य में रावण की अत्यधिक प्रशंसा किये जाने के कारण ब्राह्मणों तथा पण्डितों ने अपनी रामायण गढ़ कर रावण का चरित्र हनन करके उसे ऐसे तुच्छ एवं घृणित रूप में प्रस्तुत किया । अपनी रामायण में कीर्तावास कहते हैं कि रावण ने देश में प्यार और उपकार के साथ शासन किया ।

रणभूमि में मृत्यु के समय रावण ने राम को अपने पास बुलाकर उसके कानों में कहा कि राम तुमने कपट और धोखेबाजी के साथ युद्ध लड़ा था । इसप्रकार हम कीर्तवासन की रामायण में पाते हैं कि रावण ने सत्य और न्याय का उपदेश दिया था ।

विभीषण ने अपने भाई की हत्या करवा कर लंका का राजा बनने की लोलुपता से प्रेरित होकर अपने ही परिवार के शत्रु राम के समक्ष समर्पण कर दिया । जब राम और लक्ष्मण मेघनाथ से पराजित होकर गिर पड़े तो विभीषण विलाप करके कहने लगा कि राज्य को गंवाकर मैं मुसीबत में पड़ गया हूँ । विभीषण का खून उस समय क्यों नही खौला जबकि उसकी बहिन तथा अन्य सम्बन्धी स्त्रियों की नाक , कान , छातियाँ और बाल काट कर उनका अंगभंग किया गया और उन्हें अपमानित किया गया । कुछ की तो हत्या कर दी गई । वह इन घटनाओं पर व्याकुल नही हुआ ।

अनेक भयानक पाप कर्म करने वाले पापी राम को ईमानदार , न्यायप्रिय और वीर योद्धा बताना तथा अपने ही भाई रावण को जिसने बन्दी बनाई गई सीता के साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार किया , उसे शरारती बताना ये सब उसके द्वारा अपने ही भाई के साथ धोखा करके लंका पर कब्जा करने का उसका गूढ़ उद्देश्य दर्शाता है । यह उसकी स्वार्थसिद्धि और नीच मानसिकता के अतिरिक्त और क्या हो सकता है ? रावण एक विद्वान व्यक्ति , एक महान संत, महाज्ञानी , अपनी प्रजा और सम्बंधियों का दयालु रक्षक , एक वीर योद्धा , एक शक्तिशाली व्यक्ति , एक उदारमन सैनिक , एक पवित्र व्यक्ति , सम्यक मार्ग धारक और अनेक वरदानों का प्राप्तकर्ता बौद्ध भिक्षु था । विभीषण ने अपने भाई रावण की सार्वभौमिकता के प्रति ईर्ष्यालु होकर उसके साथ विश्वासघात किया और उसकी मृत्यु का कारण बना । रावण की मृत्यु के तुरन्त बाद फिर भी विभीषण भ्रातृत्व भावना से भरकर उसके शव पर गिरकर विलाप करके रोने लगा । रावण के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए और उसके सद्गुणों का वर्णन करते हुए विभीषण ने कहा । तुम न्याय करने में कभी विफल नही हुए । तुमने महापुरुषों का सदा सम्मान किया ।

ब्राह्मणी लोग मनगढ़ंत कहानियों से भारत के आस्थावादी लोगों को खूब मूर्ख बनाते हैं । कभी राम के नाम पर दीपावली की मनगढ़ंत कहानी रचते हैं , कभी शबरी के राम द्वारा झूठे बेर खाने का पाखण्ड रचते हैं , कभी सोने

की लंका का पाखण्ड रच कर लोगों को मूर्ख बनाते हैं । किसी भी रामायण में नही लिखा है कि राम दीपावली के दिन वन से वापिस आये थे । किसी भी रामायण में नही लिखा है कि राम ने शबरी के झूठे बेर खाये थे ।

ब्राह्मणी लोग राम का जन्म चैत्र माह में नवमीं को मनाते हैं । वनवास के समय राम की आयु 17 वर्ष की थी । राम वनवास के समय कौशल्या ने राम से कहा कि बेटा तेरे जन्म से आजतक इन सत्तरह वर्षों में कैकेयी से मैंने बहुत दु:ख झेले हैं , यदि तुम न होते तो मैं मर जाती (वाल्मीकि रामायण) । राम को चौदह वर्ष का वनवास हुआ था और चौदह वर्ष के बाद अपने जन्म दिन चैत्र नवमीं के बाद ही वन से वापिस लौटे थे । पंचवटी से सीता का अपहरण वनवास के 13 वर्ष बाद और वन से आने से एक वर्ष पूर्व हुआ था । जब सीता रावण के साथ जा रही थी , तब सीता ने रावण को कहा था कि मुझे वन में रहते 13 वर्ष हो गए हैं । ऐसा वाल्मीकि रामायण में लिखा है । सीता का अपहरण चैत्र महीने के बाद ग्रीष्म ऋतु में हुआ था । जब राम और लक्ष्मण सीता की खोज करते हुए सुग्रीव के पास पहुँचे तो उस समय ग्रीष्म ऋतु का समय था । यह तुलसीकृत रामायण में किष्किन्धाकाण्ड के पृष्ठ संख्या - 597 पर लिखा है । तुलसीदास ने लिखा है - गत ग्रीषम बरषा रितु आई । रहिहुँ निकट सैल पर छाई ।। अर्थात - हे सुग्रीव ! ग्रीष्म ऋतु बीतकर वर्षा ऋतु आ गयी । अतः मैं पास के पर्वत पर ही रहूँगा । हनुमान सीता की खोज में अक्टूबर अर्थात कार्तिक महीने के आरम्भ में लंका गया था । तुलसीकृत रामायण के किष्किन्धाकाण्ड के पृष्ठ संख्या - 602 पर साफ साफ लिखा है कि- बरषा गत निर्मल रितु आई । सुधि न तात सीता की पाई ।। अर्थात - हे लक्ष्मण ! वर्षा ऋतु बीत गई , निर्मल शरद ऋतु आ गयी , परन्तु अभी तक सुग्रीव ने सीता की खबर की कोई व्यवस्था नही की है । सीता की खोज में हनुमान कार्तिक माह की शरद पूर्णिमा को लंका में पहुंचा था । ऐसा वाल्मीकि रामायण के पृष्ठ संख्या - 527 सुन्दरकाण्ड दूसरा सर्ग के श्लोक - 57 में लिखा है । हनुमान सीता की खोज खबर लेकर एक महीने बाद आधे आश्विन में वापिस लौटा था अर्थात 15 नवम्बर के आस पास । यह तुलसीकृत रामायण के पृष्ठ - 605 पर चौपाई 4 में लिखा है । रामायण के अनुसार राम रावण युद्ध 6 महीने चला था । राम चैत्र महीने के बाद वन से वापिस लौटे थे । उस समय बहुत गर्मी थी । जब राम अयोध्या वापिस लौट रहे थे तो भरत ने मजदूरों को आदेश दिया था कि सम्पूर्ण रास्ते और उसकी आस पास की जमीन पर बर्फ के समान ठण्डा पानी छिड़क कर भूमि को बिल्कुल ठण्डा कर दो । ऐसा आदेश वाल्मीकि रामायण के पृष्ठ संख्या - 873 युद्धकाण्ड के श्लोक 7 में है । उस रास्ते से राम को अयोध्या पैदल लाते समय छाते की भी आवश्यकता हुई थी । जब राम पैदल पैदल अयोध्या आ रहे थे , तब कुछ नौकर राम के ऊपर सफेद रंग का छाता लेकर चल रहे थे और कुछ हाथ के पंखे से हवा करते हुए चल रहे थे । ऐसा वर्णन वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड के पृष्ठ संख्या - 873 के श्लोक 19 में है । इसका तात्पर्य है कि राम वैशाख अर्थात मई महीने में वापिस आये थे । जब राम अयोध्या वापिस आये , तब गगन में इतनी धूल छा गई कि गगन से धूल की वर्षा होने लगी । इससे सिद्ध होता है कि उस समय ग्रीष्म ऋतु थी । ऐसा वाल्मीकि

रामायण के युद्धकाण्ड के पृष्ठ संख्या 874 के श्लोक 29 में लिखा है । ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में सभी वृक्ष फल फूलों से लदे रहते हैं । जब राम की सेना राम के साथ अयोध्या की तरफ बढ़ रही थी , उस समय सभी मीठे फलदार वृक्ष फल फलों से आच्छादित थे । ऐसा वाल्मीकि रामायण के युद्धकाण्ड में पृष्ठ संख्या - 874 के श्लोक संख्या - 26 में लिखा है । इन सभी कथनों से पुष्टि होती है कि जब राम अयोध्या वापिस आये , उस समय वैशाख का महीना था । जब राम वैशाख में आये तो दशहरा और दीपावली का त्यौहार रावण विजय और राम के वन से वापिस आने की ख़ुशी में मनाया जाना तार्किक रूप से गलत है । जबकि सत्यता यह है कि ब्राह्मणी लोग बौद्ध लोगों के त्याहारों को खण्डित करने के लिए ऐसी मनगढ़ंत और काल्पनिक कहानियों की रचना करते हैं । महान सम्राट अशोक ने हिंसा को त्याग कर अहिंसा की दीक्षा दशहरे के दिन ग्रहण की थी , उसी दिन से दशहरा पर्व विजय दशमीं के रूप में मनाया जाने लगा , तथागत बुद्ध ने उपदेश के रूप में 84 हजार गाथाएं गायी थी , उन गाथाओं को सम्यक रूप देने के लिए सम्राट अशोक ने पूरे देश में 84 हजार स्तूप बनवाये थे । कार्तिक की अमावस्या की रात देश के समस्त 84 हजार स्तूपों पर एक ही समय पर सभी बौद्ध भिक्षुओं द्वारा दीपदान किया था । इसी प्रकार बौद्ध के त्यौहारों को खण्डित करने के लिए बाबा साहेब अम्बेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस के दिन मस्जिद गिराकर शौर्य दिवस मनाने लगे हैं , बाबा की जयंती दिवस को खण्डित करने के लिए 14 अप्रैल को सुरक्षा दिवस के रूप में आरम्भ कर दिया है । इस प्रकार बौद्धों के त्यौहारों को खण्डित करने के लिए ब्राह्मणी लोगों की सदियों से गहरी चाल रही है ।

रामलीला का नाटक खेलकर और दशहरा पर्व के अवसर पर रावण का पुतला फूंककर घृणा का वातावरण उत्पन्न किया जाता है । यदि राम लक्ष्मण सदृश कोई क्रूर व्यक्ति तुम्हारी बहन की नाक काटकर उसका अंग भंग कर दे तो तुम क्या करोगे ? क्या तुम क्रोधित नही होंगे ? क्या तुम उस अपराधी को राम लक्ष्मण के समान मानकर उसकी आरती उतारोगे और उसकी पूजा करोगे ? क्या तुम उस नाक काटने वाले को मर्यादा पुरुषोत्तम सम्बोधित करके उसके प्रति श्रद्धा करोगे ? क्या तुम अपनी उत्पीड़ित बहन को राक्षसणी कहकर उसका तिरस्कार करोगे ? यदि नही , तो इस द्वेष एवं घृणा भरी घिनौनी रामलीला के समारोह में उस विद्वान और सदाचारी रावण का पुतला फूंकने की प्रथा का जोरदार विरोध करके उसे बंद करवाने के लिए आगे बढ़ो । समस्त भारतीय लोगों के बीच परस्पर प्रेम , सौहाद्र , समता , मैत्री और बन्धुता की भावना विकसित करके राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को और अधिक सुदृढ़ करने में सहायक बनो । अपने विवेक की आवाज को सुनो ।

रावण विजय के बाद राम ने कहा कि हे सीता ! रावण ने बिना शील भंग किये हुए तुम्हें कैसे छोड़ दिया होगा ? सीता ने उत्तर दिया कि यह सत्य है , किन्तु मैं क्या कर सकती थी ? मैं केवल एक दुर्बल नारी हूँ । मेरा शरीर उसके कब्जे में था

, मैंने इच्छा से कोई गलत काम नही किया। खैर , मेरा हृदय तो तुम्हारे साथ था । यही ईश्वर को मंजूर था । सीता ने केवल इतना ही कहा । किन्तु उसने जोर देकर नही कहा कि रावण ने मेरा शील भंग नही किया था ।

राम सदा से सीता के चरित्र के बारे में सन्देह रखता था । उसने सीता को कहा कि वह अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए अग्नि में कूदकर फिर बाहर निकल आए । यद्यपि राम द्वारा निर्धारित परीक्षण के अनुसार सीता ने वैसा ही किया और सीता की अग्नि परीक्षा समाप्त होने पर भी सीता की पवित्रता के बारे में सन्देह की चर्चा प्रत्येक के होठों पर थी । सीता की अग्नि परीक्षा के उपरांत राम उसे अयोध्या ले गया और शासन करने लगा ।

एक दिन राम के भाई की पत्नी कुमकुवावती उसके पास आई और बोली ज्येष्ठ ! सीता को आप स्वयं से अधिक प्यार करते हैं । मेरे साथ चलें और देख लें कि यथार्थ में आपको सीता कितना प्यार करती है । अब तक सीता उस रावण को नही भुला पाई है । हाथ के पंखे पर रावण का चित्र बनाकर उसे अपनी छाती पर लगाकर , वह नेत्र बन्द करके आपके विस्तर पर पड़ी ध्यान मग्न हो रावण के गौरव पर आनन्दित हो रही है । राम अपनी साली कुक्कुवावली के साथ सीता के कक्ष में गया । उसने देखा कि पंखे पर बने रावण के चित्र को छाती पर दबाये हुए सीता सो रही थी । चन्द्रावती की पुस्तक बंगाली रामायण के 199 - 200 पृष्ठों में यह लिखा है । रावण का चित्र बनाने पर सीता राम द्वारा रंगे हाथों पकड़ी गई ।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड 42 वां सर्ग श्लोक 18- 21 से विदित है कि राम ने अशोक वनिका अर्थात अंत:पुर के विहार योग्य उपवन में प्रवेश किया और फूलों से सुशोभित कुश के आसन पर बैठ गए । काकुत्स्य के वंश में पैदा राजा रामचंद्र ने सीता को हाथ पकड़ कर पवित्र मैरेय नामक शराब पिलाई जैसे इंद्र अपनी पत्नी शची को पिलाते हैं । नौकरों ने अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम प्रकार के पके हुए मांस व फल भी रामचन्द्र जी के आगे भोजन के लिए रख दिए । तब नाँच - गाने में प्रवीण वैश्याएँ अर्थात अप्सराएं , नाग कन्याएं , किन्नरियां , रूपवती और गुणवती स्त्रियां शराब के नशे में धुत होकर नाचने लगीं । मन को रमाने वाले रामचन्द्र मन को हरने वाली रमणियों को हर प्रकार से सन्तुष्ट रखते थे ।

10. उत्तरकाण्ड

अपने शासन के आरम्भ से एक मास बाद एक दिन राम और सीता पुष्प उद्यान में बैठे थे और प्रेमियों के रूप में आनन्द मना रहे थे , तब राम का सीता के पेट पर ध्यान गया जो उभरा हुआ था । तुरन्त राम ने सीता से पूछा कि तुम्हारा पेट

क्यों उभरा है ? यह सुनकर राम अत्यधिक चिंता और दुःख में वहाँ से चला गया । उसने सीता को वन में भेजने का विचार बना लिया । तुरन्त राम ने अपने भाई लक्ष्मण को बुलवाया और कहा कि वह अगले दिन प्रातः काल सीता को वन में ले जाये और उसे वहीं छोड़ आए । आज्ञानुसार दूसरे दिन प्रातःकाल सीता को लक्ष्मण वन में ले गया और उसे वहीं छोड़ दिया । वहीं लक्ष्मण ने राम की आलोचना की कि उसने लोगों की निन्दात्मक बातों से बचने के लिए सीता को महल से निष्कासित कर दिया । लक्ष्मण के ये कठोर वचन सुनकर सीता को बहुत अधिक दुःख हुआ । वह मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी । दो घड़ी उपरांत होश आने पर सीता ने लक्ष्मण को उत्तर दिया कि राम की आलोचना किया जाना उचित नही है , क्योंकि वह पाँच मास से गर्भवती है और इसके लिए उसके कर्म ही उत्तरदायी हैं । उसने लक्ष्मण को अपना पेट भी दिखाया । इसलिए हम यह अनुमान नही कर सकते हैं कि वे सभी स्त्रियां जो अग्नि पर चलती हैं वे सभी पतिव्रता हों या ईश्वरीय शक्ति वाली हों । अतः सीता एक साधारण स्त्री थी । उसमें एक पतिव्रता स्त्री के कोई भी गुण मौजूद नही थे ।

वन में सीता ने दो पुत्रो को जन्म दिया । वाल्मीकि ने बलपूर्वक सीता के पवित्र होने की बात राम से कही , तब भी राम ने उस पर विश्वास नही किया । जब अंत में राम ने सीता को शपथ लेने को कहा , तब सीता ने अस्वीकार कर दिया और सीता को भूमि की खाई में कूदकर प्राण गंवाने पड़े ।

रामायण के अनुसार राम एक अयोग्य पुरुष और सीता एक शील भंग हुई स्त्री है । इसे सिद्ध करने के लिए अनेक सामान्य दृष्टान्तों में से एक यह है कि राम ने अपनी गर्भवती पत्नी सीता को वन में अकेले छुड़वा दिया । यह एक भयानक निर्दयता है । सीता के सम्बन्ध में मेरा कहना है कि वह नैतिक रूप से पवित्र नही थी , क्योंकि उसकी रावण के साथ अवैद्य घनिष्ठता थी । यदि राम के कृत्य को न्याय संगत स्वीकार किया जाता है तो सभी के द्वारा यह भी स्वीकार किया जाना चाहिए कि सीता के गर्भ का कारण रावण था । यदि प्रतिवाद किया जाता है कि सीता ने कोई अपराध नही किया और उसने राम के माध्यम से गर्भ धारण किया , तब यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि निर्दोष सीता को गर्भावस्था में वन को भेजने का राम का कृत्य नीचतापूर्ण और अमानवीय था । वाल्मीकि रामायण के गम्भीर अध्ययन से यह स्पष्ट है कि सीता का गर्भ राम से नही था ।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड के सर्ग 74 से सर्ग 76 तक शम्बूक ऋषि की कथा को विस्तार पूर्वक दिया गया है । ऋषि शम्बूक पिछड़े वर्ग के एक महान सन्त थे , वे पिछड़े वर्ग के लोगों को ज्ञान एवं शिक्षा देते थे , लेकिन रामराज्य में भारतीय मूलवासी बहुजनों को शिक्षा एवं ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार नही था । इसलिए भारतीय मूल के ऋषि शम्बूक का राम ने नृसंश रूप से वध कर दिया । इस प्रकार विदेशी आर्य संस्कृति के राक्षसों ने भारतीय मूलवासियों को ज्ञानहीन एवं शिक्षाहीन कर दिया । विदेशी राक्षसों ने भारतीय मूलवासी बहुजनों के बीच इस कार्य को धर्म कार्य के रूप में प्रचारित किया

रामायण कालीन आहार व्यवस्था का विस्तृत चित्रण वाल्मीकि रामायण में किया गया है । रामायण काल में कृषि के अभाव में राजा - महाराजा , प्रजा , ऋषि - महर्षि सभी लोग मांस का भक्षण करते थे । वाल्मीकि रामायण से तो यह भी प्रकट होता है कि स्वयं राम और सीता जिन्हें ब्राह्मणवादी लोग भगवान और जगत जननी कहते हैं , मांस खाते थे और मांस के साथ शराब भी पीते थे । यह स्वाभाविक भी है क्योंकि राम एक क्षत्रिय राजा थे । ऐसे आहार में उनको कोई दोष नही था । लेकिन वर्तमान में ब्राह्मणवादी लोग उनको क्षत्रिय न मान कर श्रृंग ऋषि के कारण ब्राह्मण सन्तान मानते हैं और प्रचारित करते हैं कि राम शराब और मांस का सेवन नही करते थे । परन्तु रामायण काल में आर्य लोग पशु मांस और शराब का सेवन करते थे और पशुओं की हत्याऐं भी करते थे । उस काल में अमीर राजा महाराजा और पुरोहित लोग गाय और बैल का मांस खाते थे , जबकि गरीब लोग भेड़ बकरी का मांस खाते थे । राम के माता पिता कौशल्या और दशरथ ने तो अपने हाथ से पशु घोड़े को काट कर बलि पर चढ़ाया था । जिसका सम्पूर्ण प्रसंग वाल्मीकि रामायण में विस्तार पूर्वक दिया गया है ।

दिल्ली से 15 अगस्त 1954 में प्रकाशित पत्रिका कारवां में ड्रिंक्स इन रामायण शीर्षक से छपा डॉ० एस. एन. व्यास का लेख ।

1. किथईसुरा - उबाली गई प्रक्रिया से बनाई गई मदिरा को यह नाम दिया गया है ।

2. मेरय - मसालों से बनाई गई । इसे सुरा (मदिरा) भी कहते हैं ।

3. मध्या - नशीली मदिरा ।

4. मन्धा - यह साधारण मादक पदार्थ में नशे की मात्रा कम करके बनाई गई मदिरा ।

5. सुराबनाम - यह किथई सुरा से भिन्न है । किथई सुरा कृत्रिम तरीकों से बनाई जाती है । केवल पुराणों में इसका अधिक वर्णन आता है ।

6. सिंधू - यह गुड़ के सीरे के अवशेष से बनाई जाती है ।

7. वरुणी - उन दिनों प्रयोग में आने वाली मदिराओं में यह सबसे अधिक नशे वाली मदिरा थी । इसे पीते ही व्यक्ति के पैर लड़खडा जाते थे ।

वाल्मीकि रामायण के कथानुसार ये था राम का असली चेहरा जो हमेशा मांस शराब और अय्यासी में डूबा रहता था । जनता के सुख दु:ख से उसका कोई ताल्लुक नही था । यदि ब्राह्मणवाद को कोई चोट पहुंचती तो रामचन्द्र द्वारा उसका निवारण अवश्य किया जाता था । लेकिन 95 प्रतिशत भारतीयों पर हो रहे अत्याचार से राम को कोई भी लेना देना नही था । क्योंकि राम को अय्यासी के सभी साधन ब्राह्मण ही उपलब्ध कराते थे । ब्राह्मण ही उनके मंत्री होते थे । ब्राह्मणों

के पाखण्ड ने राम के दुश्चरित्र को सर्वोपरि चरित्र बना दिया और उस चरित्र के आधार पर उनकी दुकानदारी आज भी चल रही है । लोग अन्धविश्वास अर्थात ब्राह्मणों के पाखण्ड को सत्य मान कर आज भी उसकी पूजा कर रहे हैं । क्या ऐसे अय्यासी और भारतीय मूल के लोगों की हत्या करने वाले हैवान की पूजा करनी चाहिए । जिसकी हैवानियत के कारण महर्षि शम्बूक की हत्या हुई थी । नारी की नाक काट कर नारी की इज्जत को तार तार किया । निर्दोषों की हत्या करके पाप कर्म किया । सीता को देश निकाला देकर नारी के साथ अन्याय किया और रावण जैसे सभ्य और चरित्रवान भारतीय राजा की हत्या करके पापकर्म किया । राम की ब्राह्मणवादी नीति के कारण 95 प्रतिशत भारतीय अशिक्षित और धनहीन रहे और ब्राह्मणवादी अत्याचारों से आहत होते रहे। इसलिए रामराज्य 95 प्रतिशत भारतीयों के लिए अशुभ था । रामराज्य सिर्फ 5 प्रतिशत ब्राह्मणवादी लोगों के लिए शुभ था । आज भी वे उसी रामराज्य को लाना चाहते हैं जिससे सिर्फ 5 प्रतिशत लोग निकम्मे बन कर सुखी रहे और 95 प्रतिशत भारतीय लोगों का हर स्तर पर शोषण होता रहे । क्या ऐसा मनुष्य पूजनीय हो सकता है । जो मात्र 5 प्रतिशत लोगों के सम्मान के लिए 95 प्रतिशत लोगों को दुःख के गर्त में डालता है । रामराज्य में ब्राह्मणों पर कोई अत्याचार नही हो रहे थे , जो भी अत्याचार हो रहे थे , वे 95 प्रतिशत भारतीय मूल के लोगों पर हो रहे थे , राम 5 प्रतिशत ब्राह्मणों को सर्वश्रेष्ठ दिखाने के लिए 95 प्रतिशत भारतीयों को निम्न प्रकार से अपमानित करते हैं -

सुनु गन्धर्व कहाँ मैं तोही । मोहि न सोहाइ ब्रह्मकुल द्रोही ।।

रामचरित मानस के पृष्ठ संख्या 571 पर राम ने कहा कि हे गन्धर्व ! सुनो , मैं तुम्हें कहता हूँ , ब्राह्मण कुल से द्रोह करने वाला मुझे नही सुहाता । राम द्वारा समाज में फूट डालने वाले ऐसे उपदेश भी भारतीय समाज को शोभा नही देते है । राम को केवल ब्राह्मण कुल से द्रोह करने वाले ही नही सुहाते हैं , शेष भारतीय समाज से द्रोह करने वालों से राम को कोई लेना देना नही है । इससे सिद्ध होता है कि राम केवल ब्राह्मणों के शुभ चिंतक थे , शेष भारतीय समाज के दुश्मन थे । वर्ग भेद फैलाने वाला ऐसा मनुष्य भगवान कैसे हो सकता है । भगवान तो वह होता है , जो हर मनुष्य को समान दृष्टि से देखता है । हर मनुष्य को सुख शान्ति के लिए मार्ग दर्शन करता है । राम और तुलसीदास के ऐसे उपदेशों के कारण भारतीय मूलवासी समाज पर हजारों वर्षों से अत्याचार होते रहे । क्योंकि तथाकथित ऐसे धर्म ग्रंथों एवं भगवानों ने भारतीय मूल समाज को ढोल और पशुओं के समतुल्य समझ कर उनका अनादर एवं अपमान ही किया है , जिससे भारतीय मूलवासी समाज की एकता सदियों से छिन्न- भिन्न रही है ।

रामायण केवल एक मनगढ़ंत किस्सा है और ईश्वर की कहानी नही है जैसा कि सामान्य लोग मानते हैं । यह एक तथ्य है जिसे अनेक लोगों ने स्वीकार किया है । गांधी ने स्वयं जोर देकर कहा कि मेरा राम रामायण का राम नही है ।

माननीय कलियुग कम्ब ने घोषित किया है कि रामायण ईश्वरीय कथा नही है । किसी भी पुराण का ऐतिहासिक आधार नही है और न ही वे लोगों को न्याय नैतिकता की शिक्षा देने में सक्षम हैं और वे केवल काल्पनिक हैं ।

आचरण और चरित्र की श्रेष्ठता के बारे में जो निष्कर्ष निकाले गए हैं , वे वाल्मीकि रामायण तथा ब्राह्मणों द्वारा किये गए रामायण के अनुवादों पर पूर्णरूप से आधारित हैं । इससे हमारे पाठक अनुभव करेंगे कि उन्होंने अब तक रामायण के उन पात्रों के बारे में जो राय बनाई हुई थी , वह पूर्णतः गलत है ।

संक्षेप में इसे स्पष्ट करते हुए कहना है कि रामायण के वे लोग जो स्पष्टवादी और न्यायसंगत विचारों वाले थे , उनका दरजा घटाकर उन्हें अयोग्य बताया गया । दूसरी ओर बेईमान और विश्वासघाती बदमाशों का दर्जा बढ़ाकर उन्हें अत्याधिक ईमानदार , दैवी और पूज्यनीय तत्वों के रूप में दर्शाया गया । इस पुस्तक का यही उद्देश्य है कि देश की एकता और अखण्डता के लिए ऐसे भ्रामक विचारों को समाप्त किया जाए और उनमें विश्वास रखने के मस्तिष्क को प्रभावित किया जाए कि एक बहरूपिया किसी प्रकार से भी सज्जन पुरुष नही कहा जा सकता ।

Certificate of Registration

This is to certify that I have registered this Story
titled swami periyar aur unki sachchi ramayan
Written by Sumedh Jagrawal
Whose SWA Membership No. is 036481
On 22/04/2018
& as a proof thereof is placed below my digital signature and
seal of the Association with relevant details in the QR code.
(CC Avenue) Reference No.:107359804657 and Order Id:036481-10

ZAMAN HABIB
(General Secretary SWA)

SWA SCREENWRITERS ASSOCIATION DIGITALLY SIGNED

Note - This certificate is subject to the declaration by the writer that This work is my original creation. I hereby declare that I have neither read it anywhere nor watched it in any Film/TV show. In case it is found otherwise I understand that my registration of this work will automatically stand cancelled and I will be solely responsible for the consequences whatsoever.

Tampering with document cancels the digital signature & thus the registration.